महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका–वर्ष 2018

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

~~~~~~~: संरक्षक :~~~~~~~

श्री एम.रवि

मुख्य कार्यपालक अधिकारी

भिलाई इस्पात संयंत्र एवं

अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

~~~~~~~: मार्गदर्शक :~~~~~~~

श्री अनुराग नागर

महाप्रबंधक प्रभारी (कार्मिक व प्रशासन)

भिलाई इस्पात संयंत्र

~~~~~~~: संपादक :~~~~~~~

डॉ. बी.एम. तिवारी

सहा. महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,

नगर राजभाषा कार्या. समिति, भिलाई – दुर्ग (छ.ग.)

~~~~~~~: संपादक मंडल :~~~~~~~

श्री राजुल दत्ता

वरि. निवासी लेखा पदाधिकारी

भिलाई

श्री एस.के. राजा

उप. महाप्रबंधक

सेल, सेट, भिलाई

श्री गोपेन्द्र सिंह ठाकुर

सहायक

केनरा बैक, सेक्टर–6, भिलाई

श्रीमती भावना चाँदवानी

उप प्रबंधक

युनाईटेड इंडिया इंश्योरेंस कं. लि. भिलाई

मुख्यपृष्ठ अभिकल्पन

वीरु स्वर्णकार

डिजाईनर स्क्वेयर

उर्मिला सदन, बैगापारा, दुर्ग(छ.ग.)

मो. : 7722828880, 7471175758

छत्तीसगढ़ के हिंदी साहित्यकार भाग–1, अनुक्रमणिका

क्र.	छत्तीसगढ़ के साहित्यकार	जन्मवर्ष	पृष्ठ क्रं.
1.	गोपाल मिश्र	1633	07
2.	बाबू रेवराम	1813	08
3.	हीरालाल काव्योपाध्याय	1856	09
4.	ठाकुर जगमोहन सिंह	1857	10
5.	जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'	1859	11
6.	माधव राव सप्रे	1871	12
7.	पं. सुंदरलाल शर्मा	1881	13
8.	लोचन प्रसाद पांडेय	1886	14
09.	प्यारेलाल गुप्त	1891	15
10.	रामदयाल तिवारी	1892	16
11.	पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी	1894	17
12.	मावली प्रसाद श्रीवास्तव	1894	18
13.	मुकुटधर पाण्डेय	1895	20
14.	डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र	1898	21
15.	राजा चक्रधर सिंह	1905	22
16.	पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'	1908	24
17.	बन्दे अली फातमी	1912	29
18.	कुंज बिहारी चौबे	1916	30
19.	गजानन माधव मुक्तिबोध	1917	31
20.	स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी	1920	32
21.	लाला जगदलपुरी	1920	33
22.	जमुना प्रसाद कसार	1926	34
23.	नारायणलाल परमार	1927	35
24.	हरि ठाकुर	1927	36
25.	आनंदी सहाय शुक्ल	1927	37
26.	डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा	1928	38
27.	देवीप्रसाद वर्मा 'बच्चू जांजगीरी'	1929	39
28.	प्रमोद वर्मा	1929	40
29.	श्रीकांत वर्मा	1931	41
30.	गुलशेर अहमद खां 'शानी'	1933	42
31.	डॉ. शंकर शेष	1933	43
32.	डॉ. मन्नू लाल यदु	1934	44
33.	बब्बन प्रसाद मिश्र	1938	45
34.	डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा	1939	46
35.	विभु खरे	1942	47
36.	आशा शुक्ला	1946	48

टिप्पणी :~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपादन सहयोग

नराकास सचिवालय के अधिकारी एवं कार्मिक

संपर्क सूत्र : ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

राजभाषा विभाग–313–ए, तीसरा तल, इस्पात भवन,

भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.) – 490 001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निर्देशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष
HARISH SINGH CHAUHAN
ASSTT.DIRECTOR (IMPLEMENTATION)

भारत सरकार

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य.)
निर्माण सदन 52ए, अरेरा हिल्स,
कमरा नं. 206, भोपाल - 462011
भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755–2553149

संदेश

यह जानकार प्रसन्नता हुई कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग पत्रिका "महानदी" का छत्तीसगढ़ के हिन्दी साहित्यकार विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है। विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन व कुशल नेतृत्व में यह पत्रिका निरन्तर पुष्पित एवं पल्लवित होती रहेगी तथा इसकी सामग्री व सुगन्ध से भिलाई–दुर्ग से जुड़े सभी क्षेत्रों के पाठक लाभान्वित होंगे। साथ ही यह पत्रिका छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु देश के अन्य केन्द्रीय प्रतिष्ठानों के पाठकगणों के लिए उपयोगी भी सिद्ध होगी। इस अंक में निश्चित रूप से बहुत ही उपयोगी जानकारी भी प्रकाशित होगी।

किसी भी देश की राजभाषा सरकार और जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है इसलिए प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का दायित्व है कि वह अपना शासकीय कार्य राजभाषा हिंदी में करें। भारत की अधिकांश जनता हिंदी समझती है और इसका प्रयोग करती है।

मुझे विश्वास है कि भिलाई–दुर्ग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों के सहयोग एवं सामूहिक प्रयासों से इस प्रकार की पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होती रहेंगी और पाठकों को रोचक एवं ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी जानकारी मिलती रहेंगी।

निश्चित रूप से भिलाई–दुर्ग द्वारा इस ओर एक नया कदम बढ़ाया गया है। मुझे आशा है कि यह अंक भी पूर्व प्रकाशित अंकों की भांति सुन्दर रोचक एवं ज्ञानवर्धक होगा। इस अंक के रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई देता हूं कि जिनके अथक प्रयासों से इस पत्रिका को उच्च स्तरीय बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जा रहा है। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर,

प्रतिष्ठायाम,
श्री एम.रवि
मुख्य कार्यपालक अधिकारी
भिलाई इस्पात संयंत्र

(हरीश सिंह चौहान)

एम. रवि
मुख्य कार्यपालक अधिकारी, भिलाई इस्पात संयंत्र
एवं अध्यक्ष नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

M.RAVI
CEO, Bhilai Steel Plant &
Chairman TOLIC, Bhilai-Durg (CG)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग के सदस्य संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों द्वारा छत्तीसगढ़ के हिंदी साहित्यकारों की जीवनी पर आधारित "महानदी" का यह अंक "छत्तीसगढ़ के हिंदी साहित्यकार" विशेषांक के रुप में प्रकाशित हो रहा है। इससे यह सिद्ध हो रहा है कि समिति के संस्थानों में कार्यरत प्रतिभा संपन्न कार्मिक न केवल कार्यालयीन काम हिंदी में करते हैं अपितु साहित्य सेवा भी कर रहे हैं। तभी तो हमारे नराकास को विगत 5 वर्षों से मध्य क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ नराकास का पुरस्कार प्राप्त हो रहा है। सच मानिये तो यह पुरस्कार हमारे सामूहिक प्रयास का ही प्रतिफल है। इसलिए मैं व्यक्तिगत रुप से नराकास परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

हमारा नराकास बदलते परिवेश में हिंदी को अत्यधिक जनसुलभ बनाने के लिए स्वतंत्र वेबसाइट का संचालन करता है जिसके माध्यम से हम अपनी गतिविधि को जन–जन तक उपलब्ध करा रहे हैं। यह हिंदी साहित्यकार विशेषांक भी आपको हमारे वेबसाइट www.narakasbhilai.in पर उपलब्ध होगा। जिसका आप अवलोकन कर सकते हैं।

आज सूचना प्रौद्योगिकी विभाग भी इस बात को स्वीकारता है कि देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। तभी तो यूनिकोड जैसी पद्धति के माध्यम से हमने हिंदी प्रयोग वृद्धि की दिशा में चमत्कारिक प्रगति की है। अतः मैं यह कहता हूँ कि यूनिकोड में काम करना अति सरल है, इसे हम सबको अपनाना चाहिए।

अंत में "महानदी" के इस विशेषॉक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों / संपादकमंडल के सदस्यों को शुभकामनाएँ देते हुए, इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

एम.रवि

(एम.रवि.)

हर किसी की जिन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल
There's little bit of SAIL in everybody's life

अनुराग नागर
महाप्रबंधक प्रभारी (कार्मिक एवं प्रशासन)
ANURAG NAGAR
General Manager I/C (P&A)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

मानव अपनी संवेदनाओं को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। भाषा वही सक्षम है, जो जुबान पर आसानी से आती है। इस दृष्टि से देखा जाए तो हिंदी, समझने में भी आसान तथा समझाने में भी आसान है। यही कारण है कि हिंदी आज विश्व में बोली जाने वाली प्रथम भाषा बन गई है।

हिंदी की इसी विशालता एवं वैज्ञानिकता ने इसे भारतीय संविधान में राजभाषा के रुप में प्रतिष्ठित किया। उसी संविधानसम्मत राजभाषा की रक्षा में नराकास, भिलाई–दुर्ग सतत प्रयासरत है। इसी कड़ी में समिति की हिंदी गृह पत्रिका "महानदी" का यह अंक " छत्तीसगढ़ के हिंदी साहित्यकार" विशेषाँक के रूप में प्रकाशित की जा रही है, ताकि आप इस प्रदेश की साहित्यिक विरासत से वाकिफ हो सकें।

समिति द्वारा प्रकाशित "महानदी" का यह विशेषाँक सदस्य संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों द्वारा छ.ग. के साहित्यकारों की जीवनी का अनुपम संग्रह है।

आशा है, पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ आपके लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी।

पत्रिका प्रकाशन की अमित शुभकामनाओं सहित,

(अनुराग नागर)

डॉ. बी.एम. तिवारी
सहा. महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव,
नराकास, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संपादकीय

छत्तीसगढ़ की अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, जिसका वर्णन रामायण एवं महाभारत जैसे उपजीव्य महाकाव्यों में प्रमुखता मिलता है। ऐसे साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक समरसता से परिपूर्ण भू–भाग को भला कैसे नकारा जा सकता है। तभी तो प्राचीनकाल से लेकर अब तक अपनी साहित्यिक समृद्धि से छत्तीसगढ़ निरंतर प्रगति पथ पर अग्रणी है।

प्रदेश की इसी भाव को आत्मसात करते हुए नराकास बिरादरी ने छत्तीसगढ़ के विस्मृति के गर्भ में पड़े साहित्यकारों को पुनः सामाजिक पटल पर लाने का संकल्प किया है। यह कार्य बड़ा ही समयसाध्य एवं श्रमसाध्य रहा है। इसे पूरा करने में छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी तथा कला परंपरा संस्थान का अविस्मरणीय योगदान है।

इस अभियान में साहित्यकारों की दीर्घ परम्परा को देखते हुए इसे दो भागों में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

अस्तु 'महानदी' की इस नवधारा में छत्तीसगढ़ के हिंदी साहित्यकारों के विशेषांक का यह प्रथम भाग आपके समक्ष सादर प्रस्तुत है, जिसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व प्रादुर्भूत साहित्यकारों को लिया गया है। इस प्रयास में अगर भूलवश कहीं कुछ त्रुटि हो तो उसे बाल सुलभ चपलता समझ कर क्षमा करेंगे।

सादर,

(डॉ. बी.एम. तिवारी)

हर किसी की जिन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल
There's little bit of SAIL in everybody's life

हमारी कलम से....

नराकास राजभाषा कार्यान्वयन समिति भिलाई–दुर्ग राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु सदैव प्रतिबद्ध रहती है। राजभाषा अधिनियम 1976 के तहत 'क' क्षेत्र में आने के कारण समिति संस्थानों में सभी प्रशासनिक कार्य 100 प्रतिशत हिंदी में ही किये जाते है। जिसमें छत्तीसगढ़ प्रदेश की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस प्रदेश की धरती सदैव ही हिंदी की पोषक एवं उन्नायक रही है, तभी तो इसके गर्भ से उत्पन्न, कवियों लेखकों एवं साहित्यकारों की फसलें अद्यतन भी लहलहा रही हैं।

इन मनीषियों में से राष्ट्रीय स्तर पर लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों के संबंध में हमनें नराकास, स्तरीय आलेख लेखन प्रतियोगिता के माध्यम से जानकारियां संकलित की जिनमें सर्वश्री पी.के. ठाकुर, कु. रूचि अग्रवाल, सुनील कुमार प्रजापति, अमितेष पुरोहित, विजय सिंह ठाकुर, सनी कुर्रे, मोनिका साहू, शशि भूषण प्रसाद, ईशा अपूर्वा, कमलेश औचार, नवीन गजपाल, दयानंद साहू, अभिषेक चंद्राकर, मनोज जैन, अजय शुक्ल, कला कुमार, मलय कुमार सिंह, सतीश मोकल, मनोज कुमार ध्रुव, पंकज कुमार साहू, डीगम्बर चंदेल, छगनलाल नागवंशी, डॉ थानसिंह हिरवानी, अलका शर्मा, एस आर साहू, एम एन तिवारी, अभिजित दास, सीमा शर्मा, गोपेन्द्र सिंह ठाकुर, दीप्ति रानी, माधुरी जोबनपुत्रा, भूमिका राजपूत, मनीषा चंदानी, मनीष कुमार साहु, राहुल यादव एवं प्रख्यात साहित्यकार पं. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की पौत्री श्रीमती नलिनी श्रीवास्तव ने अपनी कलम से अपने अंदाज में मूर्धन्य रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतिव पर प्रकाश डाला। इन साहित्यसेवी प्रतिभागियों की चुनिंदा रचनाओं को साकार स्वरूप देते हुए छत्तीसगढ़ के अनमोल कलमकारों को चुनकर 'महानदी' का यह अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है आप छत्तीसगढ़ प्रदेश के हिंदी सपूतों की जानकारियों से रूबरू होकर अवश्य आनन्दित होंगे।

छत्तीसगढ़ के वाल्मिकी–
गोपाल मिश्र

छत्तीसगढ़ी के प्रथम कवि के रूप में प्रतिष्ठित गोपाल मिश्र रतनपुर के हैहयवंशी राजा राजसिंह के राज्यकवि और दीवान थे। रामनरेश त्रिपाठी ने गोपाल का जन्म सन् 1633 माना है जबकि प्यारेलाल गुप्त ने सन् 1634 माना है। आपको पिंगलशास्त्र की गहन जानकारी थी, जिसमें पूर्णता प्राप्त करने के बाद भी संभवतः गोपाल मिश्र ने काव्यसृजन प्रारंभ किया। आपके सारे ग्रंथों में पद पद पर बदलते छंद हमें चकित कर देते हैं। एकमात्र जैमिनी अश्वमेघ में ही आपने छप्पन प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है।

गोपाल कवि काव्य कला के मर्मज्ञ थे। आदर्शवादी कवि होते हुए भी आपकी रचनाओं में आर्य संस्कृति की जीवन गाथाओं के उदात्त चरित्रांकन में कवित्व विशेष रूप से अभिव्यक्त हुआ है। आपके ग्रंथों में खूब तमाशा (सन 1689), जैमिनी अश्वमेघ (सन् 1695) गोपाल मिश्र (सन् 1698) और भक्ति चिंतामणि (सन् 1700) उल्लेखनीय हैं। आपने रामप्रताप काव्य ग्रंथ लिखना प्रारंभ किया था किंतु वह आपके देहावसान के कारण अपूर्ण रह गया था जिसे बाद में उनके पुत्र माखन कवि ने पूर्ण किया।गोपाल कवि की मृत्यु लगभग 70 वर्ष की आयु में संभवता संघ 1703 में हुई थी ।

कवि गोपाल के अत्यंत सुयोग्य पुत्र थे कवि माखन। कवि गोपाल का अंतिम किंतु अपूर्ण ग्रंथ था रामप्रताप जिसका आधार राम कथा को बनाया गया था। यह ग्रंथ सात काण्डों में विभाजित है। वृद्धावस्था के कारण कवि गोपाल ने ग्रंथ को पूरा करने का दायित्व अपने पुत्र को सौंप दिया था। यह आभास नहीं होता है कि यह महाग्रंथ दो अलग–अलग रचनाकारों की कृति है। कवि माखन ने इस ग्रंथ के लंका काण्ड के 16 अध्यायों में से 9 की और संपूर्ण उत्तराखंड की रचना की। इस तरह कभी माखन ने ना केवल अपने पिता के गौरव को बढ़ाया बल्कि अपनी रचनात्मक क्षमता की उत्कृष्ट अभिव्यंजना की।

कवि माखन ने रामप्रताप ग्रंथ को पूरा करने के उपरांत छंदशास्त्र का एक दुर्लभ ग्रंथ उपलब्ध कराया। इस ग्रंथ का नाम श्री नागपिंगल छंद विलास रखा। इस दुर्लभ ग्रंथ की हस्त प्रतिलिपि नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, के पुस्तकालय में है। इस ग्रंथ के कारण कवि गोपाल की गणना शीर्षस्थ छंदशास्त्रियों में की जाती है।

छत्तीसगढ़ के प्रथम साहित्यकार - बाबू रेवाराम

भारत वर्ष का प्रबुद्ध वर्ग आजादी के पूर्व भी साहित्यिक समृद्धि की साधना में सतत् प्रयासरत था। इस विरासत के कड़ी के रूप में कवि बाबू रेवाराम हिंदी साहित्य के रीतिकाल और भारतेंदु युग के संधिकाल के महत्वपूर्ण रचनाकारों में से प्रमुख थे। इनका जन्म रतनपुर में सन् 1813 में हुआ था।

साहित्य साधक बाबू रेवाराम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे हिंदी संस्कृत, ब्रजभाषा और छत्तीसगढ़ी के ज्ञाता तो थे ही, उर्दू और फ़ारसी पर भी उनका अच्छा अधिकार था। मूलतः वे भक्त कवि थे किंतु इतिहास और संगीत शास्त्र का भी उन्हें सम्यक ज्ञान था। या यूँ कहें कि रेवारामजी के अंदर साहित्य संगीत एवं कला की त्रिवेणी अपने रसधार से जनमानस की साहित्यिक प्यास को पूर्ण करने में पूरा जीवन अर्पित कर दिए।

पूर्ववर्ती आर्यों से प्राप्त संदर्भो के अनुसार उन्होंने 13 ग्रंथो की रचना की थी। जो उनके साहित्यिक तपःसाधना को उद्घाटित करता है। प्रारम्भ में उन्होंने देववाणी संस्कृत भाषा में पाँच ग्रंथों की रचना की जिनमें (1) सार रामायण दीपिका (2) ब्राह्मण स्त्रोत (3) गीत माधव महाकाव्य (4) नर्मदाष्टक (5) गंगा लहरी। तत्पश्चात रीतिकाल की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए इन्होंने हिंदी के काव्य ग्रंथों की रचना की जिनमें (1) विक्रम विलास (2) रामाश्वमेघ (3) रत्नपरिक्षा (4) दोहावली (5) माता के भजन और (6) कृष्णलीला के भजन आदि प्रमुख हैं।

कहा जाता है कि जब पद्य उत्कृष्ट हो जाता है तो जनमानस की पहुँच से ऊपर हो जाता है। ऐसी स्थिति में गद्य के माध्यम से सरल संवाद कायम किया जाता है। रेवाजी ने भी इसी अनुरूप गद्य लेखन की ओर प्रवृत्त हुए। उपलब्ध प्रभावों के आधार पर उनके दो गद्य ग्रंथ (1) 'लोक लावण्य वृत्तांत' (तीन भागो में) (2) 'रत्नपुर का इतिहास' मिलते हैं। जनमानस से यह भी सुनने को मिलता है कि बाबू रेवाराम ने लाफागढ़ जमींदार की जीवनी को भी इतिहास के रूप में दोहा–चौपाई में छंदोबद्ध कर लिखा था। किंतु यह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है।

इस प्रकार बाबू रेवाराम ने अनेक ग्रंथो की रचना कर संस्कृत और हिंदी के रचना भंडार का संवर्धन किया। रेवारामजी ने रतनपुर का इतिहास लिखकर एक नई परिपाटी के लेखन को गति दी थी। उनकी गद्य शैली हिंदी के आरंभिक काल में विकसित होती हुई दिखलाई पड़ती है। जो भाषा को पुष्ट करने वाली प्रतीत होती है। सही में कहा जाए तो रेवाराम जी वास्तव में छत्तीसगढ़ कीर्ति के उद्गाता थे। अपने लेखनी से अपने को अमर करते हुए आप 1873 में शरीर त्याग किये, किंतु अपनी कृतियों के माध्यम से आप आज भी हमारे बीच साहित्यिक सुवास के साथ मौजूद हैं।

छ.ग. के पाणिनी - हीरालाल काव्योपाध्याय

छत्तीसगढ़ महतारी को जनमानस की भाषा का स्वरूप देने में हीरालाल जी का अन्यतम योगदान है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी का पहला व्याकरण 1885 में लिख कर राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ी को प्रतिष्ठित किया था। यदि उन्हें छत्तीसगढ़ी का पाणिनी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

ऐसा प्रतिभा संपन्न छत्तीसगढ़ के माटीपुत्र हीरालाल जी का जन्म सन् 1856 में रायपुर में हुआ। आपने छत्तीसगढ़ी का व्याकरण उस समय लिखा जब खड़ी बोली का कोई सर्वमान्य और प्रामाणिक व्याकरण उपलब्ध नहीं था जो अपने आप में उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय प्रयास है। इस ग्रंथ के महत्व से प्रभावित होकर आंग्ल भाषाशास्त्री सर जार्ज ग्रियर्सन ने बंगाल एशियाटिक सोसायटीज जर्नल में इस ग्रंथ का अंग्रेजी में अनुवाद कर सन् 1890 में प्रकाशित करवाया है जो हीरालाल जी को अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज प्रदान किया। जार्ज ग्रियर्सन ने हीरालाल जी तथा उनके द्वारा लिखे व्याकरण पर अपनी प्रशंसात्मक सम्मति प्रगट करते हुए लिखा था – 'यह ग्रंथ भारतीय भाषाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करने वालों के लिये प्रेरणास्पद हैं।' हीरालाल का यह 'छत्तीसगढ़ी व्याकरण' केवल व्याकरण मात्र नहीं है। इस ग्रंथ में छत्तीसगढ़ी के चुने हुए मुहावरे, पहेलियां, लोक गीत और लोक कथाएं भी संकलित हैं, जो छत्तीसगढ़ी के स्वरुप को स्पष्ट करने में सहायता पहुंचाती हैं।

किसी भी देश या प्रदेश की मानवीय संवेदना को अगर नजदीक से देखना हो तो उसके भाषा एवं साहित्य का अवलोकन करना चाहिए। 19वीं शताब्दी में हीरालाल जी ने न केवल छत्तीसगढ़ के व्याकरण को लिखा बल्कि उसके माध्यम से छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति को जन–जन तक पहुँचाने का काम किया है, जो अपने आप में भगीरथ प्रयास है। ऐसे राष्ट्रीय सपूतों के इस विरासत पर ही आज भारतीय संस्कृति खड़ी है।

काव्योपाध्याय हीरालाल का सन् 1890 में देहावसान हो गया। ऐसे लोग मरते नहीं केवल देहत्याग करते हैं, क्योंकि उनकी मौलिक कृतियाँ उन्हें युगों–युगों तक जनमानस को स्पंदित करती रहती है। ऐसे कर्मठ, निष्ठावान, साहित्य सेवक को शत–शत नमन।

हिंदी साहित्य में फेटेंसी के प्रवर्तक - ठाकुर जगमोहन सिंह

भारतीय हिंदी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को खड़ी बोली के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है। इसी भारतेन्दु युग के एक अत्यंत वरिष्ठ और महत्वपूर्ण साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त ठाकुर जगमोहन सिंह का जन्म 4 अगस्त 1857 को तत्कालीन मध्यप्रदेश के विजय राघवगढ़ में हुआ था। इन्होंने काशी में शिक्षा प्राप्त की थी। शिक्षा प्राप्ति के बाद वे शासकीय सेवा में प्रवेश किए जिसके तहत उनकी प्रथम पदस्थापना तत्कालीन छत्तीसगढ़ क्षेत्र में हुई। वे कर्मणा एक प्रशासक थे किंतु उनके अन्तः में भारतीय साहित्य हिलोरें ले रहा था। यही कारण है कि उनकी लेखनी प्रणय काव्य से प्रारम्भ हुई।

ठाकुर जगमोहन सिंह ने अपनी सबसे प्रमुख कृति "श्यामा–स्वप्न" की रचना सन् 1885 में की। जिसका लोकार्पण 25 दिसम्बर, 1885 को हुआ। इसकी चर्चा उन्होंने पुस्तक के प्रस्तावना में की है। "श्यामा–स्वप्न" यों तो एक प्रेमकथा है, लेकिन इस प्रेमकथा को ठाकुर जी ने रात्रि के होने वाले 4 प्रहरों में रूपांतरित किया है। इस स्वप्न में 4 प्रहर के 4 स्वप्न हैं। वे प्रत्यक्ष को भी स्वप्न ही मानते हैं। इसीलिए "श्यामा–स्वप्न" कल्पना की वह अनंत उड़ान है। जहाँ भावना भी रससिक्त हो जाती है। यह एक मूल रूप से फैंटेसी है।

अपने सेवाकाल में ठाकुर जी रायपुर शिवरीनारायण और धमतरी जैसे स्थानों पर अधिक समय तक रहे। क्योंकि उनकी कृतियों में इस क्षेत्र की, प्रकृति और संस्कृति फैंटेसी के रूप में आयी है। उन्होंने सन् 1885 में महानदी में आयी बाढ़ से शिवरीनारायण में मची तबाही को काव्यांजलि में प्रस्तुत किया है। इसका वर्णन 'प्रलय' नामक अपनी कृति में किया है। उन्होंने बाढ़ के तांडव का काव्यमय बहुआयामी चित्र प्रस्तुत किया है। इस रचना की भूमिका के रूप में उन्होंने गद्य में महानदी के भौतिक विस्तार और आयामों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। यह विवरण उनकी प्रशासकीय दृष्टि को सामने लाती है । ठाकुर जी ने एक प्रहसन 'हुक्केवाला' नाटक भी लिखा है। इतना ही नहीं ठाकुर साहब ने महाकवि कालिदास के "ऋतुसंहार" नामक ग्रंथ का पद्यमय अनुवाद किया था ।

ठाकुरजी ने "श्यामा–स्वप्न" में फैंटेसी विधि को जिस रूप में पूरी सृजनशीलता और प्रयोगधर्मिता के साथ परिपक्क रूप में प्रस्तुत किया, उनका यह मानना है कि वे हिंदी साहित्य में फैंटेसी विधि के आविष्कारकर्ता हैं। सचमुच अगर ध्यानपूर्वक देखा जाए तो पाश्चात्य काव्यों में जो फैंटेसी की भावधारा है। ठाकुरजी के "श्यामा–स्वप्न" भी बिलकुल उस पर खरे उतर रहा है। ऐसे अनुपम विधा के आविष्कारक का देहावसान 14 मार्च 1899 को हुआ। ऐसे महामना इस धरा पर कभी–कभी ही आते हैं। छत्तीसगढ़ महतारी इन्हें पाकर धन्य हुई।

साहित्यशस्त्री आचार्य जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'

भारतीय हिंदी साहित्यकाश में अद्वितीय नक्षत्रभांड की तरह हिंदी के पहले छंद शास्त्र की रचना करने वाले आचार्य जगन्नाथ प्रसाद "भानु" का जन्म 8 अगस्त, 1859 को नागपुर में हुआ किंतु उनकी कर्मभूमि छत्तीसगढ़ ही रही है। इन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, हिन्दी, मराठी, उड़िया, प्राकृत, उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी भाषाओं तथा उनके साहित्य का गहन अध्ययन किया था। इसके अतिरिक्त, वे धर्म, दर्शन, गणित तथा काल विज्ञान के भी अध्येता थे। 'छन्दः प्रभाकर' भानु जी की सबसे पहली कृति थी जिसकी रचना सन् 1893 में तथा प्रकाशन सन् 1894 में हुआ था। इस ग्रन्थ में हिन्दी छन्दशास्त्र का पहली बार विस्तृत, सुचिंतन और वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। भानु जी ने उर्दू, फारसी के छन्द शास्त्र का हिन्दी शास्त्र की दृष्टि से अध्ययन किया था। भानु जी ने अंग्रेजी के 'मीटर' (छन्द) का भी हिन्दी के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया है। सन् 1909 में उनके दूसरे प्रमुख ग्रंथ 'काव्य प्रभाकर' का प्रकाशन हुआ। 'काव्य–प्रभाकर' में पहली बार हिन्दी साहित्य शास्त्र को सर्वांग रूप से विवेचित किया गया है।

भानु जी की अन्य कृतियां इस प्रकार हैं :– 'छन्दः सारावली', 'अलंकार प्रश्नोत्तरी', 'हिन्दी काव्यालंकार', 'रस–रत्नाकर', 'काव्य प्रबन्ध' और 'नायिका भेद शंकावली'। 'नव पंचामृत' और 'अलंकार दर्पण', 'तुलसी तत्वप्रकाश' और 'तुलसी भाव प्रकाश' नामक ग्रन्थों में उन्होंने 'मानस' के अनेक महत्वपूर्ण स्थलों को लेकर उनकी काव्य शास्त्रीय, दार्शनिक तथा भावात्मक व्याख्या की है। भानु जी की गणित तथा काल विज्ञान संबंधी कृतियों के 'अंक विलास', 'काल विज्ञान' तथा 'काल प्रबोध' बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस संबंध में कुछ अन्य कृतियां अंग्रेजी में भी हैं। 'तुम्हीं तो हो' तथा 'जय हरि चालीसी' भानु जी द्वारा भक्तिभाव से लिखी गई काव्य रचनायें हैं। उन्होंने 'जय हरिचालिसी' का मराठी अनुवाद भी किया था। उन्होंने छत्तीसगढ़ी में नवदुर्गा के अवसर पर गाये जाने जसगीतों का संकलन सम्पादन 'शीतला माता भजनावली' में किया है। वे 'फ्रैज' उपनाम से उर्दू में कविता किया करते थे। 'गुलजारे फैज' में उनकी उर्दू रचनाएं संगृहीत हैं, जो श्रृंगार प्रधान हैं। उन्होंने 'गुलजारे सखुन' में उर्दू के प्रसिद्द रचनाकारों के पदों का संग्रह किया है और उर्दू रचना–पद्धवती का परिचय दिया है।

आधुनिक हिन्दी साहित्यशास्त्र परम्परा के अध्ययन में आचार्य भानु के ग्रंथ 'छन्दः प्रभाकर' और 'काव्य–प्रभाकर' का शीर्ष स्थानीय महत्व है। इससे यह स्थापित होता है कि आचार्य जगन्नाथ प्रसाद भानु हिंदी के पहले साहित्यशास्त्री थे। भानु जी का निधन 25 अक्टूबर, 1945 को बिलासपुर में हुआ।

सुप्रसिद्ध कहानीकार - माधव राव सप्रे

हिंदी साहित्याकाश में माधवराव सप्रे जी ने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व से अन्यतम स्थान बनाया है। सप्रे जी का जन्म मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पथरिया ग्राम में 19 जून, 1871 को हुआ। उन्होंने अपनी कर्मभूमि छत्तीसगढ़ बनाई जो 19वीं और 20वीं सदी में देश का एक सबसे पिछड़ा इलाका माना जाता था। उन्हें छत्तीसगढ़ की सोंधी मिट्टी से इतना ममत्व था, कि सन् 1900 में उन्होंने बिलासपुर के पेण्ड्रा नामक स्थान से एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया और उसका नाम दिया 'छत्तीसगढ़ मित्र'। माधवराव सप्रे द्वारा लिखित कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' 'छत्तीसगढ़ मित्र' में सन् 1901 में प्रकाशित हुई। इस कहानी को हिंदी की पहली मौलिक कहानी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। या यूँ कहा जाए तो यह भारतीय कहानी का पहला बीज था। सप्रे जी ने अपनी पत्रिका में समकालीन श्रेष्ठ हिंदी रचनाकारों की समीक्षा लिखकर हिंदी में समालोचना पद्धति का सूत्रपात किया । 'छत्तीसगढ़ मित्र' में ही कामता प्रसाद गुरु जैसे उद्भट हिंदी वैयाकरण के सबसे पहले निबंध प्रकाशित हुए थे जिन्होंने हिंदी की व्याकरण की रूपरेखा रची।

'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन 1902 में बंद हो गया। किन्तु सप्रे जी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हो गये । वे नागपुर आ गये । वहां आपने एक प्रकाशन संस्थान खोला, जिसके माध्यम से 'हिन्दी ग्रंथमाला' का प्रकाशन किया । काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने विज्ञान कोश के निर्माण का कार्य सन् 1902 में प्रारंभ किया था । इस योजना में सप्रे जी को अर्थशास्त्र विभाग का कार्य सौंपा गया।

उन दिनों भारत के राजनीतिक क्षितिज पर बाल गंगाधर तिलक रूपी सूर्य जगमगा रहा था। चौंतीस वर्षीय सप्रे जी लोकमान्य तिलक के संपर्क में आये, और उन्होंने नागपुर से "हिन्दी केसरी" प्रकशित करने का निश्चय किया। "हिन्दी केसरी" का प्रकाशन एक साप्ताहिक के रूप में सन् 1907 में प्रारंभ हुआ। "हिन्दी केसरी" की उत्कट राष्ट्र भक्ति तथा चेतना से अंग्रेजी सरकार क्षुब्ध हुई और अगस्त सन् 1908 में सप्रे जी 'राज्य–विरोधी–लेख' प्रकाशित करने के आरोप में गिरफ्तार किये गये।

इसके बाद के कुछ वर्ष सप्रे जी ने सार्वजनिक जीवन से अवकाश में बिताये। इसी दौरान उन्होंने आध्यात्मिक साधना की, और मराठी संत कवि रामदास रचित 'दास बोध' तथा तिलक द्वारा लिखित 'गीता–रहस्य' का हिन्दी अनुवाद किया । बाद में उन्होंने चिन्तामणि विनायक की महत्वपूर्ण मराठी भाषा की कृति 'महाभारत मीमांसा' का भी सटीक अनुवाद किया। इनके अतिरिक्त, उन्होंने विद्यार्थियों के उपयोग के लिए कुछ रचनाओं का अनुवाद किया था। उन्होंने जबलपुर से "कर्मवीर" जैसे ऐतिहासिक साहित्यिक पत्र के प्रकाशन की योजना को भी साकारस्वरूप दिया।

सप्रे जी ने सन् 1924 में देहरादून में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 15 वें अधिवेशन की अध्यक्षता की थी। ऐसे युगप्रवर्तक साहित्यकार का देहावसान 23 अप्रैल,1926 को हो गया। किंतु छत्तीसगढ़ जनमानस आज भी सप्रे जी के प्रति अपनी कृतज्ञता का भाव रखता है। आज छत्तीसगढ़ त्रिवेणी के नाम से राजनांदगांव में स्थापित संस्था में सप्रेजी को भी अहम स्थान दिया गया है।

छत्तीसगढ़ के गांधी - पं. सुन्दरलाल शर्मा

छत्तीसगढ़ के महान सपूत सुंदरलाल शर्मा का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे छत्तीसगढ़ी काव्य के प्रवर्तक तो थे ही हिन्दी के महत्वपूर्ण रचनाकार भी थे। वे एक ओर भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अनन्य महासेनानी थे तो दूसरी ओर समाज में सुधार के लिए पूरा जीवन अर्पण करने वाले महानायक भी थे।

पं. शर्मा का जन्म 1881 में राजिम के पास चमसुर ग्राम में हुआ। शर्मा जी ने घर में ही, अंग्रेजी, मराठी, बंगला तथा उड़िया भाषा का अध्ययन किया। उन्होंने सोलह वर्ष की युवावस्था से ही काव्य लेखन प्रारंभ कर दिया था। सन् 1898 में उनकी कविताएं 'रसिक मित्र' नामक हिंदी पत्रिका में पहली बार प्रकाशित हुई थी। शर्मा जी का काव्य लेखन एक बड़ी कृति के रूप में 1898 में ही 'राजीव क्षेत्र महात्म्य' नामक पुस्तक के रूप में सामने आया।

पं. शर्मा छत्तीसगढ़ी भाषा में महत्वपूर्ण सृजन करने वाले सबसे पहले रचनाकार थे। आपने 20 से अधिक ग्रंथो की रचना की। आपका रचनाकर्म आपके कल्पनाशीलता की व्यापकता और अभिव्यंजना की श्रेष्ठता प्रतिपादित करता है। आपकी प्रकाशित कृतियों में नाटक, उपन्यास, काव्य संग्रह शामिल हैं। उनके प्रमुख नाटक हैं :– 'प्रहलाद', 'विक्रम शशिकला', 'पार्वती परिणय' और 'सीता परिणय' हैं। उनके उपन्यास :– 'श्रीकृष्ण जन्म आख्यान' और 'सच्चा सरदार' है। उनके द्वारा 'प्रहलाद' नाटक 1906 में लिखा गया था और कुछ इतिहासकार इसे छत्तीसगढ़ का पहला नाटक भी निरुपित करते हैं। उनके द्वारा रचित काव्य कृतियां इस प्रकार हैं :– 'छत्तीसगढ़ी दान लीला', 'श्री राजिव क्षेत्र महात्म्य', 'काव्यामृत वर्षिणी',करुना पचीसी', 'एडवर्ड राज्याभिषेक', 'ध्रुव आख्यान' और 'कंस वध' आदि। आपने विश्वनाथ पाठक, रींवा महाराज रघुराज सिंह और महारानी विक्टोरिया की काव्यमय जीवनी भी लिखी । शर्मा ने अपनी लेखनी को अभिनव दिशा देते हुए 'दुखिया गरीब किसान' नामक कहानी भी लिखी, जिसमें छत्तीसगढ़ के शोषित पीड़ित कृषकों की दयनीय दशा का मार्मिक चित्रण है। शर्मा जी ने इनके अतिरिक्त, कई काव्य ग्रंथो की भी रचना की थी किन्तु वे सम्प्रति तक अप्रकाशित हैं जिनमें 'छत्तीसगढ़ी रामायण' एक प्रमुख कृति है। पं. शर्मा की 1906 में प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ी दान लीला' इस क्षेत्र में सर्वाधिक लोकप्रिय हुई। इसे छत्तीसगढ़ी का प्रथम प्रबंध काव्य माना जाता है।

सन् 1918 में सुंदरलाल शर्मा ने राजिम में भगवान राजीव लोचन के मंदिर में कहारों के प्रवेश का आंदोलन चलाया। उस समय अस्पृश्य माने जाने वाले वर्गों को मंदिर में प्रवेश कराने का यह प्रदेश में पहला क्रांतिकारी आंदोलन था। सन् 1925 में राजिम के ही रामचंद्र मंदिर में हरिजन प्रवेश क लिए पं. शर्मा जी ने आंदोलन चलाया और सफलता प्राप्त की। महात्मा गांधी को प्रथम बार छत्तीसगढ़ में लाने का श्रेय पं. सुंदरलाल शर्मा को ही है। नवम्बर सन् 1933 में महात्मा गांधी देश भर में हरिजनोद्धार दौरे पर निकले थे। उसी दौरान वे रायपुर आए और धमतरी भी गये। रायपुर की एक सभा में गांधी जी ने शर्मा जी द्वारा हरिजनोद्धार के लिए किए गए कार्यों की प्रशंसा की और इस दिशा में उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। गांधी जी के पहले ही शर्मा जी ने हरिजनोद्धार का कार्य आरंभ करके यह सिद्ध कर दिया था कि वे न केवल संवेदनशील रचनाकार हैं अपितु एक सहृदय मानव एवं दूरदृष्टा भी हैं। ऐसे महामना का देहावसान 28 दिसम्बर 1940 को हो गया। छत्तीसगढ़ के भिलाई नगर में उनके नाम पर पीठ भी स्थापित है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा उनके नाम पर एक मुक्त विश्वविद्यालय भी संचालित किया जा रहा है।

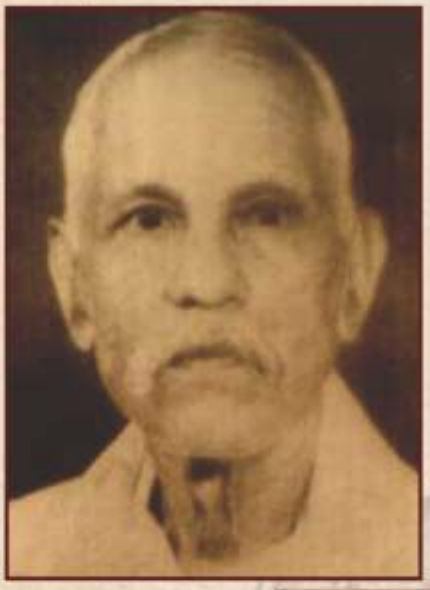

छत्तीसगढ़ के निबंधकार एवं युगत्ववेत्ता- पं. लोचन प्रसाद पांडेय

भारतीय हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युग में भाषा और साहित्य दोनों क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में छत्तीसगढ़ के साहित्यवटुक पंडित लोचन प्रसाद पांडेय का योगदान उल्लेखनीय रहा है। पंडितजी का जन्म सन् 1886 में बिलासपुर जिले के बालपुर ग्राम में हुआ था ।

पांडेय जी ने 1904 से ही गद्य और पद्य दोनों में ही लेखन कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। आपने काशी में अध्ययन किया। अध्ययनकाल के दौरान ही वहां के प्रमुख साप्ताहिक पत्र 'भारत जीवन' में आपके अनेको आलेख प्रकाशित हुए। द्विवेदी युग की आदर्शवादी प्रवृत्तियां आपके काव्य में पूर्ण रूपेण मुखरित हुई दिखती है। अपने भाव जगत में पांडेय जी अधिकतर आध्यात्मिक आदर्शों के पोशक रहे। आपका पहला काव्यसंग्रह 'कविता कुसुममाला' सन् 1909 में प्रकाशित हुआ था। सन् 1920 तक आपकी दस काव्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थी, जिनमें 'माधव मंजरी', 'मेवाड़ गाथा', 'नीति कविता' आदि उल्लेखनीय हैं। आपने गद्य के क्षेत्र में भी अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। आपने ***100*** से अधिक निबंध लिखे अतएव साहित्य परिवार में आपको उच्च कोटि का निबंधकार माना जाता है। आपने उड़िया भाषा और अंग्रेजी में भी ग्रंथो की रचना की। आपने गीता, भर्तृहरि का 'नीति शतक' और 'रघुवंश' जैसे श्रेष्ठ संस्कृत ग्रंथो का भी हिन्दी अनुवाद किया । साहित्य मानिषी पांडेय जी ने छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं को संकलित करने में भी अग्रगामी भूमिका अदा किए। आप सब विदित ही हैं कि जब काव्योपाध्याय हीरालाल के छत्तीसगढ़ी व्याकरण का अंग्रेजी अनुवाद उन दिनों जार्ज ग्रियर्सन ने किया था तो पांडेय जी ने उस ग्रंथ का संपादन, संशोधन और परिवर्धन कर उसे अधिक उपयोगी और सर्वजन ग्राह्य बनाया था ।

साहित्य ललाम पाण्डेय जी ने छत्तीसगढ़ में पुरातात्विक अनुसंधान और प्राचीन सिक्कों की खोज और उनके अध्ययन के क्षेत्र में भगीरथ प्रयास किये। आपने लगभग 40 वर्ष तक पुरातत्व संबंधी अनुसंधान कर छत्तीसगढ़ के इतिहास के खोए हुए पन्नों को जनमानस को उपलब्ध कराया। आपने दर्जनों दुर्लभ ग्रंथ, सोने, चांदी और तांबे के सैकड़ों अद्वितीय सिक्के, दस्तावेज और शिलालेखों की खोज कर उनका अध्ययन एवं विश्लेषण किया। आप महाकौशल इतिहास परिषद के भी संस्थापक थे और उसका 40 वर्ष तक नेतृत्व भी किए। आपके बदौलत इस परिषद के रिसर्च जर्नल को प्रकाशित और संपादित किये गये। छत्तीसगढ़ के इन मनिषी का देहावसान 18 नवम्बर 1959 को हुआ।

प्रसिद्ध कहानीकार एवं इतिहासकर-प्यारेलाल गुप्त

छत्तीसगढ़ के पुरातन साहित्य मनिषियों में प्यारेलाल गुप्तजी को कौन नहीं जानता। आपने अपनी साहित्यिक यात्रा कहानी से शुरू की किन्तु बाद में आपने छत्तीसगढ़ के प्रामाणिक इतिहास और लोक परम्पराओं को लिपिबद्ध करने में अपने आपको समर्पित कर दिया। आपका जन्म 17 अगस्त 1891 को कबीरधाम जिले में कवर्धा के पास पिपरिया ग्राम में हुआ था ।

आपकी पहली कहानी 'लाल बैरागिन' काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'इन्दु' में छपी थी। आपकी कहानियों का संग्रह 'पुष्पहार' प्रकाशित हुआ। आप 'एक दिन' शीर्षक से नाटक और 'सुखी कुटुम्ब' और 'लवंगलता' नामक उपन्यास भी लिखे। आप एक मराठी उपन्यास 'सरस्वती' का हिन्दी अनुवाद भी किया था। आप इतिहास संबंधी लेखन विपुल है – 'प्राचीन छत्तीसगढ़', 'फ्रांस की राज्यक्रांति का इतिहास', 'ग्रीस का इतिहास', 'बिलासपुर वैभव', 'श्री विष्णु स्मारक यज्ञ'। आपने लोचन प्रसाद पाण्डेय की जीवनी और 'सहकारी सभा, हिसाब–किताब दर्पण' की भी रचना की।

साहित्यपिपासु गुप्त जी के पुरातत्व संबंधी अनेकों लेख सम्मानित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं जो ऐतिहासिक एवं पुरातत्वीय दृष्टि से महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गए हैं। आपकी रचना "बिलासपुर वैभव" बिलासपुर का गजेटियर है , जिसे गुप्त जी ने रायबहादुर हीरालाल जी की प्रेरणा से लिखा था और वह छत्तीसगढ़ गौरव प्रसारक मंडली द्वारा प्रकाशित हुआ था। आपने 'विष्णु स्मारक महायज्ञ' ग्रंथ का सम्पादन किया, जिसमें छत्तीसगढ़ से संबंधित अनेक शोधपूर्ण निबंध संकलित हैं। ये सारे प्रकाशन उनके कठिन परिश्रम की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। ऐसे देशसेवी साहित्यकार एवं समाजशास्त्री का 14 मार्च 1976 की देहावसान हो गया।

प्रसिद्ध आलोचक - पंडित रामदयाल तिवारी

हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय क्षितिज पर छत्तीसगढ़ महतारी को पहचान दिलाने में पं.रामदयाल तिवारी को कौन नहीं जानता। आपका दार्शनिक चिंतन अत्यन्त मौलिक था जो साहित्यिक अभिव्यक्ति एवं शास्त्रीय अनुशासन से प्रदीप्त था। आपका जन्म 23 जुलाई 1892 रायपुर में हुआ था। आप धुरधंर विद्वान एवं चिंतक होने के साथ सक्षम एवं मौलिक समीक्षक भी थे। आप अपनी समालोचना पुरी निर्भीकता और तटस्थता के साथ करते थे।

आपने 'उमर खैय्याम' की रचनाओं पर अपनी समीक्षा लिखी, जो मुंशी प्रेमचंद को बहुत ही प्रभावित की। मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' पर प्रकाशित रचना की समीक्षा ने आपको वरिष्ठतम समालोचकों के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया। आप अपने दार्शनिक विचारों को निर्भीकता के साथ आलोचनाओं में समाहित करते थे।

आप द्वारा रचित सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ 'गांधी मीमांसा' है । 'गांधी मीमांसा' ग्रंथ साढ़े आठ सौ पृष्ठों और छत्तीस अध्यायों में विभक्त है। इस ग्रंथ में गांधी जी के विचारों की व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक विवेचना की गई है।

आप द्वारा अंग्रेजी भाषा में रचित ग्रंथ 'गंधिज्म एक्सरेड', 'गांधी मीमांसा' के समतुल्य ग्रंथ है। आप द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित किन्तु अप्रकाशित ग्रंथो में 'कानलिक्ट ऑफ कल्चर' एवं 'फंडामेंटल ऑफ कांग्रेस पालिटिक्स' शामिल हैं। आपने छात्रों के उपयोग के लिए 1936–37 में दो पुस्तकें दृ 'हमारे नेता' और 'स्वराज्य प्रश्नोत्तरी' प्रकाशित की थी। इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति कर्त्तव्य का ज्ञान कराना था। पं. रामदयाल तिवारी का देहावसान 20 अगस्त 1942 को हुआ।

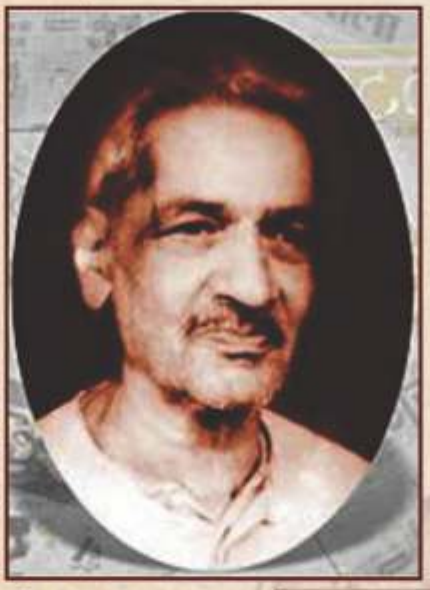

छत्तीसगढ़ में हिंदी त्रिवेणी की एक प्रबलधारा- पं. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

छत्तीसगढ़ राज्य ही नहीं हिंदी साहित्य जगत के लिए साहित्य वाचस्पति पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी का नाम परिचय का मोहताज नहीं है। हिंदी की प्राध्यापक व शोध निदेशक होने के नाते जब मैं आचार्य श्री रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास या आचार्य श्री नंददुलारे बाजपेयी जी की हिंदी साहित्य का बीसवीं शताब्दी या डॉ नगेन्द्र द्वारा संपादित भारतीय साहित्य पढ़ती हूँ, तो उन पुस्तकों में मुझे बख्शी जी के संबध में एक ही वाक्य मिला कि बख्शी जी द्विवेदी युगीन निबंधकार हैं। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण पुस्तक में कहीं पर भी बख्शी जी का उल्लेख नहीं है। आखिर ऐसा क्यों ?

कहा जाता है किसी के नाम को काटना हो तो उसकी चर्चा ही न की जाए। फिर स्वतः वह नाम गुमनामी के अंधेरे में खो जाता है।

बख्शी जी का नश्वर शरीर तो पंचतत्व में विलीन हो गया है। परन्तु वे आज भी अपनी साहित्यिक कृतियों के कारण जीवंत बने हुए हैं। उनकी रचनाएँ उन्हें कालजयी बनाने के लिए पर्याप्त है। बख्शी जी आज भी साहित्यकारों के बीच अनवरत चर्चा का विषय बने हुए हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में रविशंकर विश्वविद्यालय में "बख्शी शोधपीठ" है। इस्पात नगरी भिलाई को यदि हम साहित्य नगरी कहें तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। इस साहित्यक नगर में हीं "बख्शी सृजनपीठ" स्थापित है। समय–समय पर बख्शी सृजनपीठ द्वारा एक से एक साहित्यिक कार्य, समीक्षा–गोष्ठी एवं युवा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कार्यक्रम किये जाते हैं।

जनवरी 1900 में सरस्वती का प्रथम अंक काशीनागरी प्रचारिणी सभा के अनुमोदन से इंडियन प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसमें पाँच विशिष्ट संपादक मंडल के सदस्य बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर बी.ए., बाबू श्यामसुन्दर दास बी.ए., बाबू राधाकृष्ण दास, पं.किशोरी लाल गोस्वामी, बाबू कार्तिक दास खत्री बनाये गये लेकिन सरस्वती के दूसरे वर्ष 1901 में सम्पादन संबंधी दायित्व अकेले बाबू श्यामसुन्दर दास पर आ गया। 1903 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती का सम्पादकीय कार्य प्रारम्भ किया। हिंदी साहित्य के अनुपम नन्दनवन को बनाने में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और अन्य प्रबुद्ध विद्वानों का साहित्यिक अवदान व अनवरत परिश्रम तथा जागरूक बुद्धिमता का ही प्रतिफल है। उसी साहित्यिक नन्दनवन में द्विवेदी जी के स्नेह संरक्षण व कुशल मार्ग निर्देशन में बख्शी जी रूपी कल्पतरू का भी विकास हुआ जिनकी रचनाओं के सौरभ से हिन्दी साहित्य की मंजूषा सुरभित हुए बिना न रह सकी। यही कारण है कि बख्शी जी आचार्य द्विवेदी जी के उत्तराधिकारी माने जाते हैं।

बख्शी जी ने 1911 से 1971 तक अर्थात् साठ वर्षों तक साहित्य की सेवा की। साहित्य के क्षेत्र में आपका आगमन कवि के रूप में हुआ। आपने 'अश्रुदल' और 'शतदल' काव्य संग्रह की संरचना किया। किन्तु शीघ्र ही आपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया और कथा एवं निबंध के क्षेत्र में अग्रसर हो गये। सरस्वती सम्पादक के रूप में आपको अपने साहित्यिक लक्ष्यों के प्राप्ति के लिए विशेष सहायता मिली और आपका साहित्यिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त भी हुआ। यद्यपि सरस्वती का सम्पादकीय कार्य आपके लिए कॉटों का ताज सिद्ध हुआ पर उससे आप कभी भी भयभीत नहीं हुए। आपके व्यक्तित्व की एकाग्रता, लगनशीलता, एवं परिश्रम की पूर्ण आहूति से अनवरत साहित्य की संरचना होती रही।

सरस्वती के इस अनमोल हीरे बख्शी जी ने छत्तीसगढ़ की माटी में रहकर अपनी साहित्यिक कृतियों की संरचना की है। 'विश्व साहित्य', 'हिन्दी साहित्य विमर्श', 'हिन्दी कथा–साहित्य', 'पंचपात्र', 'नवरात्र', 'समस्या और समाधान', 'प्रदीप' आदि में आपके साहित्यिक निबंधों की विशिष्ट मीमांसा है। सदैव हंसमुख, प्रसन्नचित्त, सबको बिना किसी हिचकिचाहट के अपनाकर उनका आत्मीय बन जाना आपके लिए अति सहज था। आपने 'तुम्हारे लिए', 'मेरा देश', 'पद्मवन', 'कुछ', 'और कुछ', ' मेरी अपनी कथा', 'मेरे प्रिय निबंध', 'यात्री', ' अंतिम–अध्याय' आदि में आपके संस्मरणात्मक वैयक्तिक, आत्मकथात्मक निबंध संग्रहित हैं।

हीरे की परख जौहरी ही करता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने छत्तीसगढ़ के अनमोल हीरे बख्शी जी को सरस्वती के सहयोगी सम्पादन का भार सात जुलाई 1920 को दिया। तत्पश्चात् बख्शी की ईमानदारी लगन विद्वता और परिश्रम से आचार्य द्विवेदी इतना खुश हुए कि मार्च 1921 में उन्हें प्रधान सम्पादक नियुक्त कर दिये। आचार्य द्विवेदी जी शारीरिक अस्वस्थता के कारण कार्यमुक्त होना चाहते थे। बख्शीजी छत्तीसगढ़के एक साधारण सत्ताइस वर्षीय नवयुवक को सरस्वती जैसी विशिष्ट पत्रिका का सम्पादक बन जाना जिसका साहित्य जगत में तब तक कोई विशेष पहचान नहीं बनी थी । इस कारण उत्तरप्रदेश के ख्याति प्राप्त साहित्यकारों ने सरस्वती में अपना लेख भेजना बन्द कर दिये। यहाँ तक की प्रेमचंद की लेख कहानी भी सरस्वती पत्रिका के लिए दुर्लभ हो गई थी। ऐसी विषय परिस्थिति में भी बख्शी जी हताश नहीं हुए और दूने उत्साह से तत्कालीन परिवेश को अपनी परीक्षा की घड़ी समझ सरस्वती का सम्पादन कार्य करने लगे। बख्शी जी की साहित्य पिपासा ने किसी भी बात की परवाह न कर सिर्फ अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर आगे बढ़ते चले गये। आज मैं सोचती हूँ कि यदि बख्शीजी छत्तीसगढ़ के न होकर उत्तरप्रदेश के होते तो उन्हें शायद इस विरोध का सामना न करना पड़ता । यह विरोध की भावना का अंकुरण क्षेत्रीयता की भावना के कारण हुई होगी। सरस्वती का पहला अंक दो महीने देर से निकला। लोगों ने उसकी जमकर आलोचना की। बख्शी जी सतर्क हो गए और कलकत्ता से पुराने ब्लॉक मंगवाकर चित्रों के आधार पर स्वयं ही कल्पित नाम से अनेक लेख लिखने लगे। बख्शी जी अपने पास अगले तीन महीने के अंक की तैयारी रखने लगे। ताकि सरस्वती पत्रिका सही समय पर लगातार निकल सके।

बख्शी जी ने सदैव अपने जीवन को सत्य की छॉव में रखने की कोशिश की। उस छॉव की शीतलता का अहसास ही उनका प्रेरणा स्त्रोत था। इसी से उनकी गहन अध्ययन की अनुभूति से परिपक्व चिंतन लेखनी की अजस्त्र धारा में बह उठी। फिर वह उपलब्धि समतल मैदान में ही नहीं, क्लिष्ठ विषयों के ऊबड़–खाबड़ रास्तों से होती हुई समीक्षा शास्त्रों के दुर्गम पहाड़ों को भेदकर हिंदी साहित्य के अनुपम निर्मल स्त्रोत में परिणित हो गई। बख्शी जी ने धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्वों के विषयों को भी केन्द्र बनाकर अपने विचारों का सुन्दर अभिव्यंजना प्रस्तुत किया है। बख्शी जी ने शक्ति की उपासना के विविध रूपों और नामों का विश्लेषण किया है। वे व्यापक सांस्कृतिक दार्शनिक दृष्टिकोणों की प्रस्तुति करते हैं। इस तरह बख्शी जी के वैयक्तिक निबंधों की परिधि भी अत्यंत व्यापक है।

साहित्यकारों के बीच में आये दिन यह चर्चा का विषय होता था कि बख्शी साहित्य अप्राप्य है। अतः हम उसे चाह कर भी पाठ्य पुस्तकों में शामिल नहीं कर सकते। यह सच है कि बख्शी साहित्य बहुत बिखरा हुआ था। किसी एक के पास सम्पूर्ण सामग्री नहीं थी। लेकिन हर किसी के पास एक न एक बख्शी जी की साहित्यक कृति अवश्य थी। ऐसी स्थिति में बख्शी ग्रंथावली का प्रकाशन असंभव ही था। मैंने सात वर्षों तक अथक परिश्रम कर बख्शी साहित्य एकत्र किया। मेरा उद्देश्य यही है कि बख्शी साहित्य का प्रचार प्रसार भारत में ही नहीं विदेशों में भी हो। इसीलिए मैंने दिल्ली के प्रसिद्ध वाणी प्रकाशन से बख्शी ग्रंथावली प्रकाशित करवाया है। बख्शी साहित्य को सिर्फ छत्तीसगढ़ में ही नहीं सम्पूर्ण भारत के विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित किया जाए। तभी बख्शी जी के साहित्य से युवा–पीढ़ी परिचित होंगे और उनके साहित्य का सही मूल्यांकन होगा।

(पं. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की पौत्री श्रीमती नलिनी श्रीवास्तव द्वारा लिखित)

बाबू मावलीप्रसाद श्रीवास्तव

हिन्दी साहित्य के संवर्धन में सुप्रसिद्ध साहित्यकार माधवराव सप्रे को कौन नहीं जानता। उसी साहित्य के वटवृक्ष तले उनके परम शिष्य मावली प्रसाद श्रीवास्तव का पुष्पवन पल्लवन एवं संवर्धन हुआ। मावली प्रसाद के व्यक्तित्व का निर्माण और उनकी साहित्यिक परंपरा का विकास में सप्रे जी की छाप दिखती है। बाबू मावली प्रसाद का जन्म फिंगेश्वर में 2 फरवरी 1894 को हुआ था।

मावली प्रसाद ने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ कविताओं से किया था, किंतु सप्रे जी के कहने पर आप गद्य लेखन की ओर उन्मुख हुए। आपने कहानियां भी लिखीं जो प्रकाशित भी हुई हैं। किंतु साहित्याकाश में आपने अपना मुख्य क्षेत्र निबंध को चयनित किया। आपने धर्म और दर्शन से संबंधित विषयों पर अनेकों निबंध लिखे हैं। आप निबंधों में प्रमुखता के साथ मानव मन का विश्लेषण और चरित्र निर्माण का संदेश मिलता है। बाबू मावली प्रसादजी ने 'छत्तीसगढ़ का संक्षिप्त परिचय उसकी कुछ समस्याओं पर विचार' संबंधी महत्वपूर्ण निबंध लिखे। आपने अपने गुरू सप्रे जी को 'गीता रहस्य' और महाभारत मीमांसा' जैसे मराठी ग्रंथों के अनुवाद में निकटतम सहयोगी की भूमिका अदा की। सप्रे जी की जीवनी भी तैयार की थी जो प्रकाशित नहीं हुई। साहित्य रचना में तल्लीन मावली प्रसाद जी का 21 अगस्त 1974 को देहावसान हो गया।

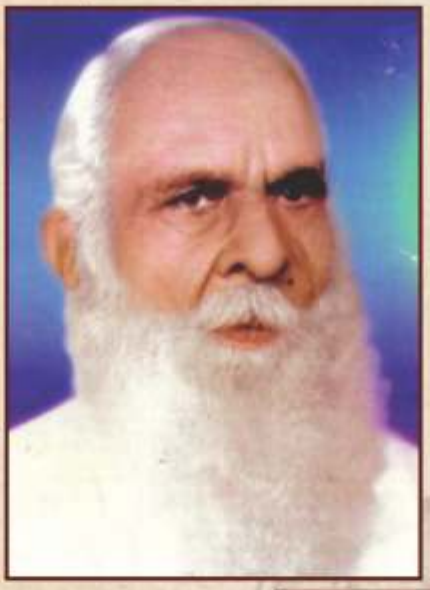

छत्तीसगढ़ के छायावादी कवि-मुकुटधर पाण्डेय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग के बाद आने वाला छायावाद युग समग्र भारतीय साहित्य परंपरा में भी एक महत्वपूर्ण समय माना जाता है । यह एक ऐतिहासिक एवं साहित्यिक तथ्य है कि छायावाद का प्रारंभ छत्तीसगढ़ से मुकुटधर पाण्डेय द्वारा किया गया था। सुप्रसिद्ध कवि एवं लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने मुकुटधर पाण्डेय की ' कुररी के प्रति ' रचना को छायावाद की प्रथम रचना माना है ।

मुकुटधर पाण्डेय का जन्म बालपुर में 30 सितम्बर 1895 को हुआ था। पाण्डेय जी ने 1907 से अपना रचनाकर्म प्रारंभ कर दिया था। उनकी पहली रचना 'प्रार्थना पंचक' आगरा से निकलने वाली पत्रिका 'स्वदेश बांधव' में प्रकाशित हुई। मुकुटधर पाण्डेय का पहला काव्य संग्रह 'पूजा के फूल' 1916 में प्रकाशित हुआ जिसमें उनकी 1909 से 1915 तक की कविताएं संग्रहित थी। उनकी महत्वपूर्ण कविताओं का संग्रह 'विश्व बोध' 1984 में प्रकाशित हुआ उनका निबंध संग्रह 'परिश्रम' 1917 में प्रकाशित हुआ और उनके द्वारा अनूदित उपन्यास 'लच्छमा' और 'शैलबाला' भी प्रकाशित हुए। उनकी एक और अनूदित उपन्यास 'मामा' और एक कहानी 'हृदयदान' भी प्रकाशित हुई।

यह उल्लेखनीय है कि 'छायावाद एवं अन्य निबंध' शीर्षक से उनके निबंधों का एक संग्रह आया। इसी वर्ष 'स्मृति पुंज' का भी प्रकाशन हुआ। यह उल्लेखनीय है कि उड़िया के प्रसिद्ध उपन्यासकार फकीर मोहन सेनापति के उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद कर आपने उपन्यास साहित्य का संवर्धन किया था। आपने रविन्द्रनाथ ठाकुर और माइकेल मधुसूदन दत्त की बंगला और अंग्रेजी की अनेक कविताओं का सुन्दर और सरस अनुवाद कर खड़ी बोली में प्रगीत रचना का सूत्रपात किया। मुकुटधर पाण्डेय को 'पदम श्री' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। ऐसे साहित्यिक मनिषी कवि पाण्डेय जी का 6 नवंबर 1989 को देहावसान हो गया।

मानस मर्मज्ञ - डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र

मानस मर्मज्ञ डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र बीसवीं शताब्दी के लब्ध प्रतिष्ठित कवि हैं। अपनी प्रतिभा में इन्होंने साहित्य की प्रायः सभी विधाओं पर लेखनी चलाई है। उनका विपुल साहित्य इसे प्रमाणित भी करता है। डॉ. मिश्र हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग के राम काव्य परंपरा के कवि हैं। राम कथा को लेकर महत्वपूर्ण कृतियों की रचना करने वाले और राम कथा साहित्य के दार्शनिक चिंतन का विवेचन करने वाले आचार्य के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र का व्यक्तित्व बहु आयामी है। वे कवि, निबंधकार, नाटककार, दर्शनशास्त्री और भारतीय संस्कृति के व्याख्याता के रूप में जाने जाते है। यह संयोग है कि डॉ. मिश्र सेवाभावी शीर्षस्थ प्रशासक एवं समर्पित शिक्षा शास्त्री भी थे ।

उनके तीन महाकाव्य खड़ी बोली हिन्दी में हैं। पहला महाकाव्य 'कौशल किशोर' 1934, दूसरा महाकाव्य 'साकेत संत' 1946 एवं तीसरा महाकाव्य 'रामराज्य' 1960 में प्रकाशित हैं। इन कृतियों में डॉ. मिश्र ने गांधीवादी विचार धारा के अनुरूप सुदृढ़ राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक एकता, प्रधान व्यक्तिगत आचार और संस्कार प्रधान समाज के रूप में रामराज्य का प्रतिपादन किया है। डॉ. मिश्र के समीक्षात्मक ग्रंथों में 'तुलसी दर्शन' सर्वोपरि है। इसी ग्रंथ पर उन्हें 1939 में नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा विषयक सर्वोच्च उपाधि डी.लिट प्रदान की गई है।

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र का जन्म 12 सितम्बर 1898 दोपहर 12 बजे सदर बाजार, राजनांदगांव में हुआ था। आप – 1914 में मैट्रिक शास.बहु.उच्च.माध्य.शाला, राजनांदगांव में हुई उसके पश्चात 1918 में बी.ए.हिस्लाप कॉलेज नागपुर, 1920 में एम.ए.मनोविज्ञान, 1921 में एल. एल.बी., 1939 में डी.लिट् शोध प्रबंध 'तुलसी दर्शन' पर प्राप्त किया।

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र के पिता पं. नारायण प्रसाद मिश्र एवं उनके चाचा उत्तरप्रदेश में स्थित उन्नाव जिले के ग्राम बहुराज मऊ से राजनांदगाँव आये थे। ठेकेदारी के व्यवसाय में रहकर उन्होंने बी.एन.सी.मिल, बी.एन.आर. रेल लाईन एवं रानी सागर के निर्माण में अपना योगदान दिया। रायपुर में भी अनेक भवनों के निर्माण में उनका योगदान रहा। डॉ.मिश्र के अग्रज पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र सत्र न्यायाधीश रहे। अनुज पं. बलभद्र प्रसाद मिश्र प्रकाशक एवं पत्रकार रहे। उन्होंने साप्ताहिक 'जनतंत्र' का प्रकाशन किया। सबसे छोटे भ्राता पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र जिलाधीश होकर सेवानिवृत्त हुए। डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र पं. नर्मदा प्रसाद मिश्र सत्र न्यायाधीश थे एवं कनिष्ठ पुत्र पं. काशी प्रसाद मिश्र संभागीय पंचायत अधिकारी थे। वर्तमान में डॉ. मिश्र के ज्येष्ठ पौत्र प्रदीप कुमार मिश्र पुलिस विभाग में डी.एस.पी. (महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा सम्मानित किया गया) एवं कनिष्ठ पौत्र आशीष कुमार मिश्र भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत हैं।

हिन्दी साहित्य जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र स्व. डॉ. बलदेव प्रसाद जी मिश्र का कर्मक्षेत्र बड़ा विशाल एवं गौरवशाली है।

उन्होंने सर्वप्रथम 1922 में रायपुर में वकालत प्रारंभ की किंतु वकालत उन्हें रास नहीं आयी। 1923 में वे रायगढ़ चले गये तथा 1940 तक रायगढ़ रियासत को अपनी सेवाएँ दी। इस दौरान वे सात वर्ष तक नायब दीवान, दस वर्ष तक रियासत के दीवान तथा एक वर्ष न्यायाधीश के पद पर रहे।

डॉ. मिश्र भारत के ऐसे प्रथम शोधकर्ता थे जिन्होंने अंग्रेजी शासन काल में भी अंग्रेजी के बदले भारतीय भाषा में अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया व उपाधि प्राप्त की। वे नागपुर विद्यापीठ में दस वर्षों तक हिन्दी विभाग के मानसेवी विभागाध्यक्ष रहे। रायपुर के एस.बी.आर. कालेज एवं दुर्गा आर्ट्स कालेज के प्रथम प्राचार्य के पदों को भी उन्होंने सुशोभित किया। इन्होंने हैदराबाद एवं बड़ौदा विश्वविद्यालय को विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं दी। पुराने मध्यप्रदेश एवं महाकौशल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हिन्दी पाठ्यक्रम समिति के वे संयोजक भी रहे।

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भारत सेवक समाज नामक सर्वोच्च संस्था की केन्द्रीय समिति में मनोनीत किया।आपने प्रयाग,लखनऊ, आगरा,दिल्ली, पंजाब, वाराणसी, पटना, कलकत्ता, जबलपुर, सागर, नागपुर, हैदराबाद तथा बड़ौदा इत्यादि विश्वविद्यालयों में डी.लिट तक शोध छात्रों के परीक्षक के रूप में कार्य किया। वे बिलासपुर में संभागीय सतर्कता अधिकारी (विजिलेंस) एवं खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहें। मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मान की उन्होंने तीन बार अध्यक्षता की वे बंगीय हिन्दी परिषद कलकत्ता के अध्यक्ष रहे एवं मैसूर राज्य में हिन्दी के विशिष्ट व्याख्याता रहें।

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र ने साहित्य के साथ–साथ राजनैतिक क्षेत्र में भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ दी थी।वे रायगढ़, खरसिया तथा राजनांदगाँव की नगरपालिकाओं के अध्यक्ष रहे एवं रायपुर नगर पालिका के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रहे। 1972 में वे राजनांदगाँव जिले के खुज्जी विधानसभा क्षेत्र से विधानसभा क सदस्य चुने गये ।

आपकी रचनाओं की लम्बी सुची है जिनमें : 1. 'शंकर दिग्विजय' –नाटक (1923) 2. 'श्रृंगार शतक'– ब्रजभाषा (1928) 3. 'वैराग्य शतक'– – ब्रजभाषा (1928) 4. असत्य संकल्प 5. वासना वैभव 6. जीव विज्ञान (सभी 1928) 7. मादक प्याला– खैय्याम का पद्यानुवार 8. समाज सेवक 9. मृणालिनी परिणाय– नाटक (सभी 1932)10. साहित्य लहरी 11. गीतासार 12. कौशल किशोर (सभी 1934) 13. तुलसी दर्शन – डी.लिट का शोध प्रबंध (1938) 14. मानस मंथन (सभी 1939) 15. क्रांति 16.जीवन संगीत (1940) 17. काव्य कलाप (1942) 18. व्हाट ए रूलर शुड नो – अंग्रेजी में (1943) 19. सुमन (1944) 20. साकेत संत– 6 महाकाव्य (1946) 21. हमारी राष्ट्रीयता (1948) 22. हृदय बोध 23. स्वग्राम गौरव 24. उमर खैय्याम की रूबाइयां (सभी 1951) 25. भारतीय संस्कृति 26. मानस में रामकथा (सभी 1952) 27. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा 28. अंतरू स्पूर्ति (1954) 29. कौशल किशोर 30. साकेत संत–संक्षिप्त एवं संशोधित 31. छत्तीसगढ़ परिचय 32. काव्य किल्लोर–भाग 1, 33. काव्य किल्लोर–भाग2, 34. मानस के चार प्रसंग 35. साहित्य संचय 36. भारतीय संस्कृति को गोस्वामी जी का योगदान (सभी 1955) 37. मानस माधूरी 38. श्याम शतक (दोनो 1958) 39. मानस रामायण (दोनो 1959) 40. राम राज्य 1960, 41. व्यंग्य विनोद (1961) 42से 46 सरल पाठमाला (1942) पांच भाग में 47. संक्षिप्त अयोध्या कांड (1957) 48. छत्तीसगढ़ी लोक जीवन 49. हमारा गाँव 50. भगवद् गीता 51. सुराज्य रामराज्य 52. मानस की सूक्तियां 53. रघुनाथ गीता 54. राम का व्यवहार 55. मानस में उक्ति सौष्ठव (सभी 1958) 56. उत्तम निबंध 57. छाया कुण्डल (दोनों 1962) 58. ईश्वर निष्ठा (1950) 59. ज्योतिष प्रवेशिका (1952) 60. सुन्दर सोपान (1957 से 59) 61. बिखरे विचार (1950 से 60) 62. अमर सुक्तियां 63. सौंख्य तत्व 64. नरेश शतक 65. सरोज शतक 66. आउट लाइंस आव हिन्दूइज्म(सभी अप्रकाशित) 67. मेरे संस्करण (कुछ अंश प्रकाशित) 68. प्रचार गीत 69. मेरे संस्मरण (कुछ अंश प्रकाशित) 70. प्रचार गीत 71. छत्तीसगढ़ का जनपदीय साहित्य 72. संस्कृत साहित्य सौरभ 73. मानस मुकता 74. विनोदी लेख 75. रोचक यात्रायें 76. जनजातियों में 77. हिन्दी भाषा और साहित्य 78. कथा संग्रह 79. पुराण विज्ञान 80. काव्य संग्रह 81. उदात्त संगीत 82. तुलसी शब्द सागर (सभी प्रकाशित) इसके अतिरिक्त 'मंथन मंथन' श्रृंगार सार, 'संसार सागर' विमला देवी (उपन्यास) आदि पुस्तकें भी लिखी गई है इसके अलावा सैंकड़ों की संख्या में पत्र–पत्रिका अंक में प्रकाशित हैं।

साहित्य एवं कला मनिषी - राजा चक्रधर सिंह

छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि पुराने मध्यप्रदेश में भी रायगढ रियासत की एक अलग पहचान थी। इस रियासत के राजा साहित्य, कला, संगीत और नृत्य विधाओं के सृजन, संरक्षण और विस्तार देने वाले हुए। इसी रियासत के ऐसे ही एक सुरुचि संपन्न राजा चक्रधर सिंह का जन्म 1905 में हुआ था।

कला और साहित्य के क्षेत्रों में चक्रधर सिंह की रूचि किशोर अवस्था से ही थी। उन्होंने 26 वर्ष की आयु तक दो उपन्यास, 'वैरागढ़िया राजकुमार' तथा 'माया चक्र' की रचना कर डाली। उन्हें हिन्दी, संस्कृत, छत्तीसगढ़ी, अंग्रेजी तथा उड़िया भाषा का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने संस्कृत के सुभाषितों का एक सुन्दर संग्रह 'रत्नहार' के नाम से प्रकाशित किया ।

चक्रधर सिंह ने निम्नलिखित ग्रंथों का सृजन किया – 'वैरागढ़िया राजकुमार' (2भाग), 'अलकापुरी' (4 भाग), 'माया चक्र' (3 खण्ड), 'प्रेम के तीर' (नाटक), 'रम्य रास' (प्रबंध काव्य) और 'मृगनयनी'। उन्होंने संस्कृत की श्रृंगार प्रधान रचनाओं का संकलन 'रत्नहार' नामक ग्रंथ में तथा ब्रजभाषा की श्रेष्ठ रचनाओं का संकलन 'काव्य कानन' ग्रंथ में किया। इन रचनाओं के चयन से उनकी काव्य के प्रति गहरी रूचि का परिचय मिलता है। राजा साहब उर्दू के भी अच्छे शायर थे । उनकी उर्दू शायरी के दो संकलन प्रकाशित हैं – 'जोश फरहत' और 'निगाहे फरहत'।

एक साहित्य प्रेमी और साहित्यकार के रूप में चक्रधर सिंह को जितनी ख्याति प्राप्त थी, उससे अधिक ख्याति उन्हें कला पारखी होने और कला के क्षेत्र में अनुपम योगदान करने के लिए भी प्राप्त थी । महाराजा चक्रधर सिंह ने शास्त्रीय नृत्य कथक प्राचीन तथा अर्वाचीन पद्धतियों का समन्वय करते हुए उसकी एक नई नृत्यशैली का सूत्रपात भी किया जो रायगढ़ घराने के नाम से प्रसिद्ध है । चक्रधर सिंह ने संगीत पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की भी रचना की थी। ऐसे साहित्य, कला एवं संगीत प्रेमी का निधन 7 अक्टूबर 1947 को हो गया। उनके जाने से छत्तीसगढ़ में साहित्य के क्षेत्र में एक अपूरणीय क्षति हुई।

पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी -'विप्र'

मध्यप्रदेश शासन के उपेक्षित रवैये एवं विकास की दृष्टि से हाशिए पर खड़ा छत्तीसगढ़ को एक अलग राज्य के रूप में स्थापित करने के सपने को साहित्य और जन आंदोलन के माध्यम से साकार करने में समर्पित आन्दोलनकारियों में पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का नाम उल्लेखनीय है। आपने लेखनी एवं कार्य दोनो के माध्यम से इसे सक्रिय रखने में भगीरथ प्रयास किया।

विप्र जी, का जन्म 6 जुलाई 1908 को बिलासपुर में हुआ था। आपने सन् 1922 से लेकर लगातार 60 वर्षों तक छत्तीसगढ़ी और हिन्दी में हजारों कविताओं, निबंधों एवं एकांकियों का सृजन किया । विप्र जी के मन में युवाकाल से ही छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी के सेवा के प्रति जो भावना अंकुरित हुई, उसने उनके जीवन की दिशा और लक्ष्य को एक अलग ही मुकाम प्रदान किया। उनकी पहली पुस्तक 'कुछु काहीं' सन् 1934 में प्रकाशित हुई, लेकिन उन्हें 1958 में प्रकाशित काव्य संग्रह 'सुराज गीत' से सर्वाधिक ख्याति मिली। इसके बाद उनके कुछ और गीत संग्रह – 'गांधी गीत', 'योजना गीत', 'फागुन गीत', 'डबकत गीत' और 'धमनी हाट' भी प्रकाशित हुए,जो उनके व्यक्तित्व को निखार प्रदान किये।

विप्र जी का संपूर्ण जीवन एक रचनात्मक आंदोलन में लगा रहा। आपने अपना संपूर्ण जीवन छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य के लिए लगा दिया। उसी का परिणाम है कि आपको पूरे छत्तीसगढ़ में ही नहीं, बल्कि पुरे देश में छत्तीसगढ़ी के का सम्मान बढ़ा था । उनका देहावसान 2 जनवरी 1982 को हुआ था । ऐसे साहित्य के सिपाही को शत्–शत् नमन।

संयुक्त (संयंत्र एवं नराकास) राजभाषा क्विज चैम्पियन ट्राफी प्रतियोगिता की झलकियाँ

नराकास की 46 वीं छः माही बैठक एवं

पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

छत्तीसगढ़ के हिंदी साहित्यकारों पर आधारित नराकास, स्तरीय आलेख लेखन प्रतियोगिता की झलकियाँ

छत्तीसगढ़ की पत्रकारिता के भीष्म पितामह - श्री बब्बन प्रसाद मिश्र

श्री बब्बन प्रसाद मिश्रा का जन्म 16 जनवरी 1938 को बालाघाट जिले में हुआ। आपके स्व. पिता राधाकिसन मिश्र स्वंतत्रता संग्राम सैनानी रहे और लगभग 29 महीनों तक अंग्रेजों के कारावास में रहें। आपकी शिक्षा–दीक्षा बालाघाट, वारासिवनी में सागर विश्वविद्यालय के अंतर्गत हुई एंव विधि की स्नातक परीक्षा आपने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर से उत्तीर्ण की श्री मिश्र जी ने अपनी पत्रकारिता की यात्रा जबलपुर से वर्ष 1962 में प्रारंभ की। वर्ष 1962 से 1972 तक आप दैनिक युगधर्म समाचार पत्र में सह–संपादक रहे। इसी बीच बार–काउंसिल से विशेष अनुमति लेकर कुछ वर्षों तक वकालत भी की। पूर्ववर्ती मध्यप्रदेश में एंव वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य में चार दशकों से भी अधिक समय से वे साहित्य पत्रकारिता एवं समाजसेवा से जुड़े रहें। वर्ष 1972 से 1986 तक वे दैनिक युगधर्म रायपुर के संपादक रहे। कुछ समय तक वे भोपाल में दैनिक स्वदेश समाचार पत्र से जुड़े रहे। वर्ष 1987 से 2001 तक दैनिक नवभारत रायपुर के संपादक रहे। वर्ष 2001 से 2003 तक दैनिक भास्कर रायपुर एवं बिलासपुर के लिए प्रबंधकीय सलाहकार के रूप में उन्होने अपनी सेवाएं प्रदान की। वे रायपुर प्रेस–क्लब के अध्यक्ष, छत्तीसगढ साहित्य परिषद के संस्थापक महामंत्री तथा छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक विकास परिषद के अध्यक्ष के पद को सुशोभित करते रहे हैं।

उन्होंने वर्षों तक साहित्यिक, सांस्कृतिक विशेषांको का संपादन किया हैं तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में आपकी बहुचर्चित पुस्तक ''मैं और मेरी पत्रकारिता'' अनेक पत्रकारों के लिए दिशाबोधक एंव मार्गदर्शक का कार्य कर रही है।

अपने अंतिम समय में वे वर्तमान में कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एंव जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर की विद्वत परिषद के लिए महामहिम राज्यपाल छत्तीसगढ, द्वारा मनोनीत किए गए हैं तथा छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति विभाग के अंतर्गत स्थापित पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ के अध्यक्ष थे। उनके आलेखों की कृति ''आजादी की आधी सदी'' बहुचर्चित कृति हैं जो 2014 प्रकाशित हुई। आपको छत्तीगढ़ शासन द्वारा सर्वोच्च साहित्य–पत्रकारिता सम्मान ''पंडित सुंदरलाल शर्मा'' सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त आपको पत्रकारिता एवं साहित्य सेवाओं के लिए अनेक सम्मान्नीय संस्थाओं ने भी सम्मानित किया हैं ।

बबन प्रसाद मिश्र जी 8 नवंबर 2015 रविवार दोपहर को इस नश्वर संसार समे विदा ली ।

कवि हृदय गजलकार- बन्दे अली फातमी

कलम की तलवार पकड़े साहित्यिक सिपाहियों ने समय–समय पर गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय भागीदारी भी निभाई, विदेशी वस्त्रों का त्याग किया तो सरकारी नौकरियां भी छोड़ी। जेल गए और शासन के कठोर दंड भी सहे। आजादी की लड़ाई में छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जनपद से भी एक ऐसा नाम है और वह है स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, गीत–गजलकार बन्दे अली फातमी का। बन्दे अली फातमी का जन्म 12 नवम्बर 1912 में रायगढ़ के एक रईस परिवार में हुआ था। गौर वर्ण, लगभग छः फीट से अधिक लंबाई वाले कवि व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी फातमीजी हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, अरबी, फारसी और बंगला भाषा साहित्य पर भी समान अधिकार रखते थे। वे हिन्दी के छंद व उर्दू कविता की तमाम बारीकियों से वाकिफ थे।

फातमी जी के पिता मुल्ला फखरुद्दीन अली की गिनती रायगढ़ के सेठों में होती थी। किंतु देश भक्ति का जुनून जिस पर सवार हो, वह भला संपत्ति कहां संभाल सकता है, वही फातमी जी के साथ हुआ। पिता के निधन के पश्चात वे सियासत की लड़ाई के साथ विरासत में मिली दौलत व व्यापार को बढ़ा नहीं सके। समय का पांसा पलटा और फातमी जी की दुकानें बिक गईं। व्यापार ठप्प हो गए और रह गया शहर में रहने को मात्र एक पक्का मकान।

अब तक वे आजादी की यात्रा में शामिल हो चुके थे। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने व स्वदेशी धारण करने की अलख जगाने हेतु घर से बाहर निकल पड़े थे। 1930 में जब गांधीजी बिलासपुर आये थे, तब वहां के प्रतिनिधि मंडल में बंदे अली फातमी भी थे। आजादी की लड़ाई लड़ते हुए कवि हृदय फातमीजी के गीत–गजल भी समाज में अपना किरदार निभा रहे थे।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को अंग्रेजी हुकूमत के साथ–साथ राजशाही शासन का भी कोपभाजन बनना पड़ा था, जिससे फातमीजी अछूते नहीं रहे। 1930 में बिलासपुर व 1933 में नागपुर में ध्वज सत्याग्रह में रायगढ़ से शामिल होने वाले फातमी को भी तत्कालीन सत्ता के जुल्म को सहना पड़ा। लेकिन इन तमाम यातनाओं से जूझते हुए भी कवि फातमी की आवाज हमेशा बुलन्द थी जो उनकी कविताओं में स्पष्ट झलकती है।

कवि हृदय फातमी जी की पहली गज़ल अज्ञेयजी के सम्पादन में 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई थी। इसके पश्चात बहुत सी गजलें तत्कालीन पत्रिकाओं में विशेष कर हंस, चांद, माधुरी, कर्मवीर, सुकवि, सरस्वती आदि में प्रकाशित होती रही। लेकिन उनका व्यक्तिगत कोई संकलन नहीं निकल पाया। उनका मानना था कला की दृष्टि से उर्दू में गीत लिखे जा सकते हैं तो हिन्दी में गजल भी कही जा सकती है।

गीत गजल के रचयिता फातमी जी कभी किसी साहित्यिकवाद या गुटबंदी में नहीं पड़े। उनके काव्य की केन्द्रीय सोच मानवीय प्रेम है। वे संपूर्ण जगत को प्यार से बांधना चाहते थे।

कठिन संघर्षों में भी फातमीजी ने साहित्य का दामन नहीं छोड़ा था। 1940 में हरिद्वार में आयोजित भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में बन्दे अली फातमी ने भाग लिया। वहां उनकी प्रंशसा में सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा था 'बन्दे अली फातमी स्नेह स्निग्ध वाणी के दूत, युग लेखन में प्रखर व सजग है।'

एक रईस खानदान के महल में जन्मे बन्दे अली फातमी एक गरीब की कुटिया से 22 नवम्बर 1981 को इस दुनिया से विदा हो गए। फातमीजी के मात्र दो पुत्रियां हैं जो संभवतः इन्दौर में रहती हैं।

क्रांतिकारी विचारधारा के प्रबल प्रवाह साहित्यकार- कुंजबिहारी चौबे

स्वाधीनता के लिए छत्तीसगढ़ के जिन महापुरुषों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और सामाजिक क्राति के बीज बोए उनमें कुंजबिहारी चौबे का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाएगा। कुंज बिहारी चौबे स्वतंत्रता और स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति थे मात्र 28 वर्ष की उम्र में उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता और समाज सुधार का इतना काम किया कि छत्तीसगढ़ तथा राजनांदगांव के लिए वह गौरव की बात है।

मॉ भारती के लाल को बनाने वाले श्री कुंज बिहारी का जन्म 16 जुलाई 1916 को राजनांदगांव के निकट बजरंगपुर – नवागांव में सभ्रांत ब्राम्हण परिवार में हुआ। परिवार के इस स्नेह ने उन्हें क्रोधी और जिद्दी तो बनाया साथ ही कुछ कर गुजरने की अद्भुत प्रेणना भी दी। प्रखर प्रतिभा के धनी श्री चौबे अपनी क्रांतिकारी विचारधारा के प्रबल प्रवाह में बहते चले गए। इस प्रवाह ने उन्हें महात्मा गाँधी और ठाकुर प्यारेलाल सिंह जैसे क्रांतिकारी डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जैसे साहित्यकार का चहेता बना दिया।

अपने अध्ययन के दौरान ही श्री चौबे ने स्टेट हाईस्कूल के विद्यार्थी के रूप में ऐसा कर दिखाया जो बड़े क्रांतिकारियों के लिए ही संभव था। उन्होंने स्कूल पर लगा यूनियन जैक उतार कर जला दिया तथा उसके बदले तिरंगा फहरा दिया और हेडमास्टर के पूछने पर साहसपूर्वक अपना यह अपराध स्वीकार लिया। इसके लिए उन्हें इतनी बेंते खानी पड़ी थी कि मारने वाला भी थक गया। इस घटना से पूरे नगर में सनसनी फैल गई और वह अंग्रेजों की नजर में चढ़ गये।

इस घटना ने उनके जीवन की धारा ही बदल दी। और वह राष्ट्रीय आंदोलन और समाज सुधार के गीत गाने लगे। उन्होंने कालेज में प्रवेश तो लिया किन्तु पढ़ाई छोड़कर क्रांति के गीत गाने लगे। उन्हें रियासत से निकाल दिया गया तब वह कुछ समय के लिए गाँधी जी के पास सेवाग्राम चले गए। बाद में वापस आकर उन्होंने गृहस्थी बसाई। साथ ही प्रखर लेखनी से देशभक्ति और समाज सेवा की कविताएं लिखते रहे ।

कुंज बिहारी चौबे को किसानों के प्रति अत्यधिक हमदर्दी थी। किसान की दशा पर उन्होंनें अनेक कविताएं भी लिखीं । इस तरह उन्होंने अनगिनत कविताएं लिखी। उनका जीवन असाधारण था और कविताएं विलक्षण थी। वह सभी काम समाज के ढर्रे से हटकर करते थे और सभी बातों पर अपनी प्रखर विचारधारा से विलक्षण तर्क प्रस्तुत करते थे। जिसे देख – सुनकर सभी लोग अचंभित होते थे। यह विलक्षण जीवन जीकर विलक्षण और आकस्मिक ढंग से 5 जनवरी 1944 को काल के गाल में समा गए। चौबे जी की मृत्यु पर डॉ. नंदूलाल चोटिया ने लिखा –

हृदय वेदना, शब्द समूहों को, धरती पर मेल रही है
अब भी उसके आँगन पर, उसकी कविता खेल रही है
अब भी अश्रु ढलक पड़ते है, सिहरे, कर्मठ ज्ञान विचारी, मेरा कवि था, कुंज बिहारी।

उनके निधन पर डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, नर्मदा प्रसाद खरे, अवतार श्री मेहर बाबा से लेकर छत्तीसगढ़ के अनेक महापुरूषों ने उनकी भूरि – भूरि प्रशंसा करते हुए अविस्मरणीय और उल्लेखनीय संस्मरण लिखे हैं।

राजनांदगांव की धरती संस्कारधानी कहलाती है क्योंकि यहां उपजे अनेक महापुरूषों ने पुराने संस्कारों में परि किया है तथा नये संस्कारों को जन्म दिया है, कुंज बिहारी चौबे ने नांदगांव की माटी को सुगंधि दी है। चौबे की कुछ कविताओं का संकलन कुछ महान व्यक्तियों के संस्मरणों के साथ उनके सुपुत्र श्री अविकल चौबे ने अवशेष नाम से प्रकाशित किया है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर अभी बहुत काम बाकी है।

प्रगतिशील एवं नई कविता के बीच का सेतु- मुक्तिबोध

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' हिन्दुस्तान साहित्य जगत की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ व्यक्तित्व थे । मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर 1917 को मध्यप्रदेश के श्योपुर (शिवपुरी) जिला मुरैना ग्वालियर में हुआ था । मुक्तिबोध मराठी, अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू चारों भाषाओं में पारंगत हैं । अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए आपने हिन्दी को ही अपनाया था ।

हिन्दी साहित्य की एक बड़ी घटना के रूप में 'तार–सप्तक' का 1943 में प्रकाशन हुआ था और इसमें मुक्तिबोध की कविताएं सम्मिलित होने पर पूरे हिन्दी जगत का ध्यान उनकी ओर गया था । 'तार सप्तक' में सम्मिलित मुक्तिबोध की कविता को बीसवीं सदी की हिन्दी कविता का सबसे बेचैन, सबसे तड़पता हुआ और सबसे ईमानदार स्वर के रूप में स्वीकार किया गया है ।

उनके जीवनकाल में उनकी कविता की कोई पुस्तक नहीं प्रकाशित हो पाई । इसके बावजूद वे ऐसे विलक्षण रचनाकार सिद्ध हुए कि उनके लिखे कविताओं की गूंज परवर्ती कविता, विचार, आलोचना या कहानी सबमें बढ़ती ही चली गई ।

मुक्तिबोध की 1964 में मृत्यु हुई, इनकी मृत्यु के उपरांत पहला कविता संकलन 'चांद का मुंह टेढ़ा है' ज्ञान पीठ द्वारा प्रकाशित हुआ । इसी वर्ष नवम्बर 1964 में विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर द्वारा मुक्तिबोध द्वारा निबंधों का संकलन 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध' प्रकाशित हुए। परवर्ती वर्षों में मुक्तिबोध के अन्य संकलन 'काठ का सपना' तथा 'विपात्र' (लघु उपन्यास), 'सतह से उठता आदमी' प्रकाशित हुए। पहली कविता संकलन के 15 वर्ष बाद, 1980 में उनकी कविताओं का दूसरा संकलन 'भूरी भूरी खाक धूल' प्रकाशित हुआ और 1985 में छः खंडों में 'मुक्तिबोध रचनावली' प्रकाशित हुई। इन रचनाओं में मुक्तिबोध ने मानवीय संवेदनाओं और सौंदर्यबोधी आस्था को प्रगट किया है । वे निजी अनुभूतियों से परे जाकर तटस्थता के भाव से वैश्विक भाव बोध कीरचना करने में सफल हुए ।

'अंधेरे में' मुक्तिबोध की अंतिम कविता है और शायद सबसे महत्वपूर्ण भी । सत्ता और बौद्धिक वर्ग के बीच गठजोड़, उनके बेनकाब होने, सत्ता द्वारा लोगों का दमन करने, पुरानी मान्यताओं को ध्वंस कर नये सृजन करने, इतिहास के बारे में नयी अंतर्दृष्टि देने वाले बिंदु इस कविता में उभर कर आए है । 'अंधेरे में' स्वतंत्रता के बाद के भारत के दो दशकों का आख्यान ही नहीं है, उसमें संपूर्ण अतीत मुखरित होता सुना जा सकता है ।

मुक्तिबोध मूलतः कवि हैं । उनकी आलोचना उनके कवि व्यक्तित्व से ही निःसृत और परिभाषित है । उन्होंने एक ओर प्रगतिवादी कविता की वाद विशेष के प्रति निष्ठा की आलोचना की तो दूसरी ओर नई कविता के पतनशील स्वरुप को रेखांकित किया । यहां उनकी आलोचना दृष्टि का पैनापन और मौलिकता असन्दिग्ध है । उनकी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक समीक्षा में तेजस्विता है । जयशंकर प्रसाद, शमशेर, कुंवर नारायण जैसे कवियों की उन्होंने जो आलोचना की है, उसमें विचारोत्तेजकता है । काव्य की सृजन प्रक्रिया पर उनका निबंध महत्वपूर्ण है । खासकर फैन्टेसी का जैसा विवेचन उन्होंने किया हैं, वह अत्यन्त गहन और तात्विक है । उन्होंने नयी कविता का अपना शास्त्र ही गढ़ डाला है । 11 सितम्बर, 1964 को नई दिल्ली में आधुनिक साहित्य जगत के इस सशक्त हस्ताक्षर ने अंतिम सासे ली।

पत्रकारिता के पितृ पुरूष - स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी

स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी छत्तीसगढ़ की पुरानी पीढ़ी के उन रचनाकारों में से अन्यतम हैं जिन्होंने साहित्य और पत्रकारिता दोनों के माध्यम से एक साथ सामाजिक चेतना फैलाने का कार्य किया था और स्वतंत्रता आंदोलन के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने में विशिष्ट भूमिका निभाई। वैसे भी बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में साहित्य और पत्रकारिता में कोई भेद नहीं था । प्रायः सभी पत्रकार मूलतः साहित्यकार होते हुए पत्रकारिता में संलग्न थे ।

आपका जन्म 1 जुलाई, सन् 1920 हुआ था । त्रिवेदी जी की पहली रचना सन् 1933 में नागपुर के 'हिंदवासी' में प्रकाशित हुई थी । बाद में उनकी रचनाएं 'माधुरी', 'नवभारत', 'शुभचिंतक', 'सारथी' तथा 'आलोक' आदि पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती रहीं ।

आप द्वारा रचित ग्रंथ :–

1. 'भूख' (काव्य संग्रह) 1946,
2. 'बरसों बाद भी' (काव्य संग्रह) 1989,
3. 'भाषण के पौधे हरियाये' (व्यंग्य काव्य संग्रह) 1989,
4. 'तीसरा किनारा' (कहानी संग्रह) 1989 में प्रकाशित हुआ। त्रिवेदी जी ने समय–समय पर कई निबंध भी लिखे जो संगृहीत नहीं हैं। कुछ कविताओं के संग्रह अप्रकाशित हैं । उन्होंने 'देवकुमार' उपनाम से भी कहानियां लिखी। इनके द्वारा रचित तीन नाटक हैं – 'राहुल दान', 'नई सुबह' एवं 'उत्थान के पथ पर' । तीनों ही नाटकों में राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना के साथ नैतिक मूल्यों का वर्णन किया गया है।

उनके निधन के उपरांत सन् 2014 में उनके दो काव्य संग्रह – 'स्वराज्य गान' और 'आदमी पर रहे न रहे, बात रह जाति है', प्रकाशित हुए । उनकी कई कृतियां अब भी अप्रकाशित हैं । इनमें से प्रमुख हैं– 'वीर हरदौल' (खण्डकाव्य), 'कनेर के फूल' (गीत), 'राहुल दान', 'नई सुबह', 'उत्थान के पथ पर' (सभी नाटक) ।

त्रिवेदी जी छत्तसीगढ़ की पत्रकारिता के प्रमुख स्तंभ थे । उन्होंने सन् 1936–37 में वे हिन्दी साहित्य मंडल, रायपुर की पत्रिका 'आलोक' का सम्पादन किया । त्रिवेदी जी सन् 1942 में छत्तीसगढ के सर्वप्रमुख साप्ताहिक समाचार पत्र 'अग्रदूत' रायपुर के सहायक सम्पादक भी बने । 'अग्रदूत' में अंग्रेज शासन विरोधी लेखन के कारण सन् 1943 में उन्हें प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा । वे 1946 से 1950 तक 'महाकोशल' (साप्ताहिक) के सम्पादक रहे । बाद में सन् 1951 में वह दैनिक बना । "महाकोशल" छत्तसीगढ़ का पहला दैनिक समाचार पत्र था और त्रिवेदी जी उसके प्रथम संपादक थे । इस तरह वे छत्तीसगढ़ में दैनिक समाचार पत्र के सबसे अग्रणी नायक हैं । वास्तव में पूरे छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता की अलख जगाने में उनकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही हैं । छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के पुरोधा का देहावसान 11 जुलाई सन् 2009 को हुआ।

साहित्य जगत में बस्तर की पहचान- लाला जगदलपुरी

जब कभी भी सुदूर आदिवासी अंचल बस्तर में साहित्य की अलख जलाये रखने वाले रचनाकारों का स्मरण किया जाता है तो उनमें लाला जगदलपुरी का नाम सबसे पहले आता है । लाला जगदलपुरी का पूरा नाम लाला राम श्रीवास्तव था । उनका जन्म 17 सितम्बर 1920 को जगदलपुर में हुआ था । हिंदी साहित्य में उनका लगाव बचपन से ही रहा जो आगे चलकर उन्हें लेखन के क्षेत्र में ले आया ।

लालाजी ने 1936 में अपना रचना कार्य प्रारंभ किया । उनकी पहली रचना 1939 में प्रकाशित हुई थी । वे हिन्दी के अतिरिक्त, छत्तीसगढ़ी, हल्बी और भर्तरी भाषाओं में अपनी कृतियों का सृजन करते रहे । दण्डकारण्य को जितना करीब से लाला जगदलपुरी ने देखा, उतना गहन और सूक्ष्म अध्ययन बहुत कम लोगों ने किया था। उन्होंने इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास और आदिम संस्कृति को हर कोण से देखा और उसे आधुनिक जगत के समक्ष पुरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया ।

लाला जगदलपुरी ने नाटक, रूपक, निबंध, कहानी और कविताएं लिखीं । उनकी ग़ज़लों का संग्रह है, 'जिंदगी के लिए जूझती ग़ज़लें' । उनके दो कविता संग्रह 'मिमियाती जिंदगी दहाड़ते परिवेश' और 'पड़ाव–5' प्रकाशित हैं । लोक साहित्य विषय पर उनके शोध और सर्वेक्षण के कई ग्रंथ हैं जिनमें से प्रमुख है :– 'बस्तर – (लोक कला – संस्कृति)', 'बस्तर की लोकोक्तिया', 'हल्बी लोक कथाएं', 'वन कुमार' । ऐसे समर्पित साहित्यकार लाला जगदलपुरी का 14 अगस्त 2013 को देहावसान हुआ था ।

सुरमयी गीतों के रचयिता - नारायणलाल परमार

छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्यकार, गीतकार, कवि नारायण लाल का जन्म 1 जनवरी 1927 को हुआ था । उन्होंने हिन्दी और छत्तीसगढ़ी दोनों भाषाओं में रचना धर्म का निर्वाह किया । आधी सदी से भी अधिक समय तक आपके लेख देश भर की पत्र पत्रिकाओं में छपे, अनेक गीत रेडियों में बजते रहे, कवि सम्मेलनों की जान बने रहे और पाठ्य पुस्तक के माध्यम से बच्चों ने आपको खूब पढ़ा ।

परमार जी का लेखन सन् 1939 से प्रारंभ हुआ था। आप के श्री परमार अखबार नवीस पिता के आदर्शवादी पुत्र थे । पिता को अंग्रेजी शासन के विरूद्ध लिखने के लिए जिले के अंदर और फिर राज्य से बाहर रहना पड़ा । इस वजह से परमार का प्रारंभिक जीवन बहुत कष्टप्रद रहा । आपने आजीविका के लिए टाइमकीपर के रूप में काम किया, दर्जीगिरी की, फौज में भी गये और फिर शेष जीवन शिक्षक के रूप में गुजारा । स्कूल के दिनों से ही उन्होंने लेखन प्रारंभ कर दिया था । आगे चलकर आपने देशभक्ति श्रृंगार, व्यवस्था विरोधी और दार्शनिकता से ओतप्रोत रचनाएं लिखी।

आप छत्तीसगढ़ में नई कविता के अग्रगामी रचनाकार थे । आपको कथाकार और उपन्यासकार के रूप में भी जाना जाता है । आपने बालोपयोगी साहित्य भी लिखा हैं । नारायणलाल परमार ने गुजराती साहित्य की कुछ प्रमुख रचनाओं का हिन्दी अनुवाद भी किया था । उनके साहित्यिक प्रकाशन इस प्रकार हैं –'प्यार की लाज', 'छलना' और 'पूजामयी' उपन्यास है, 'कांवर भर धूप', 'रोसनी के घोसना पत्र', 'खोखले शब्दों के खिलाफ', 'सब कुछ निस्पन्द', 'कस्तूरी यादें' और 'विस्मय का वृन्दावन' काव्य संग्रह हैं । उनका छत्तीसगढ़ी साहित्य इस प्रकार है –'सोंन के माली', 'सुरुजनई मरै' और 'मतवार अउ दूसर एकांकी' । नारायणलाल परमार के दो उपन्यास "प्यार की लाज" और "छलना" बहुत चर्चा में रहे । उनकी छत्तीसगढ़ी में प्रकाशित कृतियों में कथा संग्रह 'सोन के माली' को सराहा गया था । उनकी अनेक कृतियां अप्रकाशित रहीं । ऐसी अप्रकाशित कृतियों में 'राधा' खंड काव्य भी है जो उनकी एक महत्वपूर्ण कृति हैं। उनका निधन 26 अप्रैल 2003 को हुआ था ।

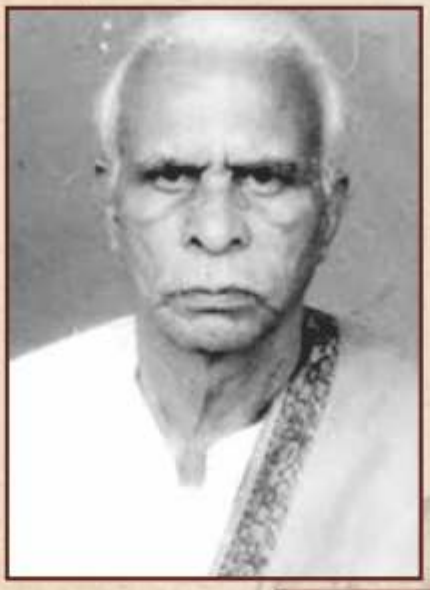

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं इतिहासविद्- हरि ठाकुर

आजादी की लडाई के महत्वपूर्ण सिपाही एवं छत्तीसगढ राज्य की स्थापना के लिए लगातार आंदोलन का नेतृत्व करने वाले और हिन्दी तथा छत्तीसगढ़ी भाषा में उत्कृष्ट रचनाओं के सर्जक हरि ठाकुर का जन्म 16 अगस्त 1927 को रायपुर में हुआ । उनका पूरा नाम ठाकुर हरिनारायण सिंह था किंतु आम जन मानस उन्हें प्यार से हरि ठाकुर के नाम से पुकारता था।

हरि ठाकुर की पहली रचना 'भौहें' जानी–मानी साहित्यिक पत्रिका 'माधुरी' में 1948 में छपी थी । हरि ठाकुर ने 50 और 60 के दशक में नारायण लाल परमार और देवी प्रसाद वर्मा 'बच्चू जांजगीरी' के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ में साहित्यिक चेतना के प्रसार के लिए अद्भुत अभियान चलाया था ।

प्रदेश के अन्य पांच कवियों के साथ 'नए स्वर' में हरि ठाकुर की रचनाएं 1956 में एक पुस्तकाकार रूप में पहली बार सामने आयीं । वर्ष 1963 में उन्होंने ठा. प्यारेलाल सिंह की जीवनी लिखी । बच्चू जांजगीरी के साथ उन्होंने 1965–66 में मासिक पत्रिका 'संज्ञा' (मासिक) का संपादन किया । 'नए स्वर' और 'संज्ञा' दोनों ही प्रकाशनों को अखिल भारतीय स्तर पर ख्याति मिली थी । उन्होंने ठा. प्यारेलाल सिंह द्वारा 1950 में प्रारंभ किये गये किन्तु कुछ समय बाद बंद हो गये साप्ताहिक 'राष्ट्रबंधु' का 1966 में पुनर्प्रकाशन प्रारंभ किया ।

हरि ठाकुर की एक महत्वपूर्ण कविता संग्रह 'लोहे का नगर' 1967 में प्रकाशित हुआ । छत्तसीगढ़ की विभूतियों के जीवन चरित्र पर आधारित उनकी दो कृतियां –'छत्तीसगढ़ के रत्न' तथा 'छत्तीसगढ़ गीत अउ कविता' – 1968 में प्रकाशित हुई । गीत संकलन के रूप में 'गीतों के शिलालेख' का प्रकाशन 1969 में हुआ, और 'नए विश्वास के बादल' का प्रकाशन 1970 में हुआ । छत्तीसगढ़ की गरिमा की भावना से ओत–प्रोत छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन 'जय छत्तीसगढ़' 1977 में प्रकाशित हुआ । गीत संकलन 'सुरता के चंदन' 1979 में तथा काव्य संकलन 'पौरुषः नए संदर्भ' का प्रकाशन 1980 में हुआ ।

छत्तीसगढ़ के स्वाभिमान को जगाने वाली उनकी दो कृतियां –'उत्तर कोसल बनाम दक्षिण कोसल' नामक शोध निबंध तथा 'शहीद वीर नारायण सिंह' पर उनकी लंबी कविता – 1990 में प्रकाशित हुई । 'मुक्ति गीत' और 'अंधेरे के खिलाफ' कविता संग्रह भी ऐसी ही भावना से प्रेरित होकर लिखे गये थे, जिनका प्रकाशन 1991 में किया गया । उनके द्वारा रचित 'छत्तीसगढ़ के इतिहास पुरुष' (21 ऐतिहासिक पात्रों का जीवन परिचय) का प्रकाशन 1994 में और खण्ड काव्य 'अमर शहीद वीर नारायण सिंह' का प्रकाशन 1995 में हुआ जो छत्तीसगढ़ी में लिखा वीर रस प्रधान प्रथम खण्ड काव्य है। उन्होंने 1996 में 'प्राचीन कोसल अर्थात् छत्तीसगढ़ का आरंभिक इतिहास', और 1999 में 'छत्तीसगढ़ गाथा और जल, जंगल और जमीन के संघर्ष की शुरुआत' की रचना की ।

कृतिकार और चिंतक हरि ठाकुर जीवन भर सक्रिय रहे । उन्होंने 1956–57 में 'नए स्वर' भाग 1 और 2 का संपादन, 1965 में कुंजबिहारी चौबे की छत्तीसगढ़ी कविताओं का संपादन और प्रकाशन तथा 1967 में 'समवाय' के कविता खंड का संपादन किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अनेक कृतियों का संपादन किया जिसमें 'कोसल कौमुदी', 'धनी धरमदास के छत्तीसगढ़ी पद', 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' प्रमुख हैं । 3 दिसम्बर 2001 को छत्तीसगढ़ महतारी के इस सपूत ने नश्वर संसार से विदा ली ।

महान कवि लेखक एवं साहित्यकार - आनंदी सहाय शुक्ल

देश में फिरंगियों के प्रति आन्दोलन चरम पर था। देशवासी अंग्रेजों को नफरतभरी निगाहों से देखते हैं। उन्हें अब अंग्रेजी हुकूमत रास नहीं आ रही है। क्योंकि " पराधीन सपने सुख नाहि " अब सबके मन में पैठ बना ली थी। इन्हीं कशमकश में मध्य भारत की पावन भूमि में रायगढ़ के प्रसिद्ध शुक्ल परिवार में शुक्ल पक्ष की चंद्रमा की तरह आनंदी सहाय शुक्ल का जन्म रायगढ़ (छ.ग.) जिले में 14 अगस्त 1927 को हुआ था। आपकी शिक्षा माध्यमिक स्तर तक हुई। क्योंकि अल्पायु में ही आपके पिता का निधन हो गया, जिससे घर की जिम्मेदारियाँ आपके ऊपर आ गई, जिसके चलते औपचारिक शिक्षा बाधित हो गई। आपकी पत्नी का नाम कमलारानी एवं पुत्र का नाम राजेश शुक्ल एवं पांच पुत्रियों का भरापूरा परिवार था। आपको कविता लिखने का जुनून कक्षा आठवीं से ही पड़ गई थी। उन दिनों आपको आम कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ के माध्यम से जनता का भरपूर स्नेह मिला था। उस दौर में श्री शुक्ल प्रदेश के अकेले ऐसे कवि थे, जिसे दूसरे प्रदेशों में भी बुलाया जाता था जो छत्तीसगढ़ के लिए गौरव की बात है। आपको हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार डॉ. हरिवंश राय बच्चन के साथ कविता पढ़ने का भी अवसर मिला था। वे कविता लेखन के साथ–साथ लॉन टेनिस एवं बैडमिंटन के खिलाड़ी रहे एवं कई चैम्पियन सम्मान भी प्राप्त किये।

आपके साहित्यिक रचनाओं में प्रमुख हैं :– (1) जय लोकतंत्र (2) नथनी हाट बिकानी, लंबी कविताओं का संग्रह ;प्रकाशनाधीन है। आपने राष्ट्र केशरी, बापू नामक पत्रिका का भी संपादन किया। आप नई कविता, मुक्त छंद, उदधृत गीत काफी चर्चित रही। आज भी जनमानस सुधि साहित्य पिपासुओं में आपका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है।

आपको रायपुर में सृजन सम्मान के अलावा स्थानीय स्तर पर कई सम्मान मिले। आप रायगढ़ नगर निगम में लाईब्रेरियन पद से सेवानिवृत्त होने के बाद स्वतंत्र लेखन किया। आपका निधन 15 अगस्त 2015 को दिल्ली में हुआ।

साहित्य से जुड़े सम्माननीय शिक्षक एवं मार्गदर्शक- डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा

डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा का जन्म 01 मई 1928 को जांजगीर में हुआ। आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार आपका कुलीन ब्राम्हण परिवार में जन्म हुआ। माता–पिता सेवती शर्मा व पं. श्याम लाल शर्मा की स्नेहिल छाया में पालन–पोषण हुआ। आपने छत्तीसगढ़ के कृषक जीवन की शब्दावली पर आधारित अपने शोध कार्यों से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

हिन्दी के लेखक तथा समीक्षक के रूप में प्रख्यात होने के बाद, डॉ. शर्मा ने विगत तीन दशकों से अपने लेखन कर्म को छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संवर्धन के लिए समर्पित कर दिया है । हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी शब्दों के साथ और गोष्ठियों और चर्चाओं में प्राध्यापकीय मुद्रा में अर्थ पूछना और फिर उत्तर देकर सबकों चमत्कृत कर ज्ञान के अछूते क्षेत्र से परिचित कराना उनकी विशेष प्रतिभा और शब्द–शिल्पी होने का प्रमाण है ।

छत्तीसगढ़ी गद्य का सौंदर्य निर्दिष्ट कराने वाले तथा लोक कथात्मक कहानियों से छत्तीसगढी कला साहित्य का समारंभ करने वाले ये ऐसे कथाकार हैं जिन्हें शिष्ट कथाकार का संधिस्थल कहा जा सकता है । प्रयास प्रकाशन ने उनकी कहानियों को भोजली त्रैमासिक छत्तीसगढी पत्रिका में प्रकाशित करके और फिर सुसक झन कुररी सुरता ले में संग्रहित करके एतिहासिक कार्य किया । बाद में इनकी अन्य कहानियां तिरिया जनम झनि देय – शीर्षक से छिपी जिसे एम.ए. हिन्दी के पाठ्यक्रम में समावेशित किया गया । इसका द्वितीय संस्करण अभी हाल में बिलासा कला मंच ने प्रकाशित किया है । लोक कथात्मक आंचलिक कहानियां छत्तीसगढ के इतिहास और संस्कृति की धरोहर है । इन कहानियों की भाषा शैली अत्यंत प्रभावोत्पादक और मानक छत्तीसगढी गद्य के उदाहरण है । डॉ. शर्मा की अन्य लोकप्रिय कृति गुडी के गोठ– बात नवभारत में प्रकाशित स्तभं का चुनिंदा संकलन है । छत्तीसगढ़ी गद्य की आदर्श संस्थापना की दृष्टि से तीनों कृतियां अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

इसके मुख और पूंछ को जहां छत्तीसगढ़ का इतिहास एवं परम्परा के रूप में प्रस्तुत किया गया वही मुख्यांश को छत्तीसगढ़ी हिन्दी शब्दकोश के रूप में विलासा कला मंच ने छापा । इसके पूर्व के डॉ. रमेशचन्द्र महरोत्रा के शब्दकोश में रायपुरी शब्द अधिक थे । डॉ. शर्मा ने उसे बिलासपुरी के साथ समन्वित कर वृहद विस्तृत किया । इस तरह प्रमाणिक शब्द शिल्पी, कोशकार, इतिहास तथा संस्कृति के पुरोधा के रूप में डॉ. शर्मा प्रतिष्ठित हुए । रतनपुर और मल्हार छत्तीसगढ के पुरातत्व के संग्रहालय हैं । इन पर दो पुस्तकें आपने लिखी । मल्हार की डिडिनदाई पर पहली बार प्रमाणिक प्रकाश आपने डाला । इसी तरह छत्तीसगढ़ के व्रत, त्यौहार पर अरपा पाकेट बुक्स की प्रस्तुति भी उल्लेखनीय कही जा सकती है । छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य पर तो इनके अनेक लेख प्रकाशित व वार्ताओं के रूप में प्रसारित होकर प्रशांशित हुए हैं । इस तरह डॉ. शर्मा छत्तीसगढ के जीवंत इनसाइक्लोपीडिया हैं ।

डॉ. शर्मा लेखन व व्याख्यान दोनों में पटु हैं। हिन्दी में पहले भी प्राध्यापक, निबंधाकर व आलोचक के रूप में आपकी पहचान बना चुके थे । उनका प्रबंध पटल निबंध संग्रह (1969) प्रयास प्रकाशन से प्रकाशित व स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए पठनीय प्रकाशन प्रमाणित हो चुका है । ऐसे शब्दों के जादूगर और छत्तीसगढ़ के माटी पुत्र की अनवरत सेवा–साधना का लाभ प्रदेश को मिल रहा है।

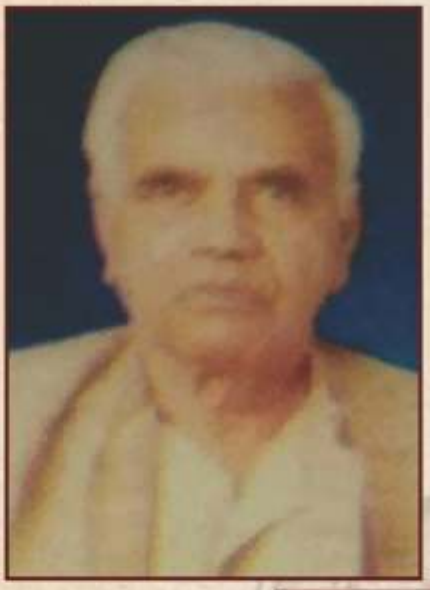

छत्तीसगढ़ का सैंतीसवागढ़ - बच्चू जांजगीरी

'बच्चू जांजगीरी' का वास्तविक नाम देवी प्रसाद वर्मा था । उनका जन्म 19 जुलाई 1927 को हुआ था फक्कड़ स्वाभाव के 'बच्चू जांजगीरी' ने ग्राम जीवन और ग्राम्य प्रकृति के सजीव और सुन्दर शब्द चित्र प्रस्तुत किये हैं । उनके पहले कविता संग्रह 'मड़ैया गाती है' के प्रकाशन का बहुत स्वागत हुआ था । 'बच्चू जांजगीरी' का दूसरा कविता संग्रह है 'रास्ता काटती बिल्ली' । 'बच्चू जांजगीरी' के प्रकाशित ग्रंथ हैं द्द 'मस्तों का मसीहा' (जीवनी), 'मड़ैया गाती है', 'रास्ता काटती बिल्ली', 'थमा हुआ जल' और 'मेरे प्रिय गीत' (सभी काव्य संग्रह), 'तस्वीर के टुकड़े' (उपन्यास), 'इमामबाड़ा' (कहानी संग्रह) और 'किसको कितना याद करूं' (संस्मरण) । इनके अलावा आपने एक दर्जन से अधिक साहित्यिक ग्रंथों का संपादन किया था । कवि सम्मेलनों में आपके कविता पढ़ने का ढंग निराला था ।

'बच्चू जांजगीरी' और हरि ठाकुर का गहरा संबंध था । दिलचस्प बात है कि 1945–46 में बच्चू जांजगीरी और हरि ठाकुर के साथ नारायण लाल परमार भी जुड़ गए और तीनों ने मिलकर छत्तीसगढ़ कि हिन्दी कविता और छत्तीसगढ़ी कविता को नई पहचान दी थी । बाद में हरि ठाकुर और बच्चू जांजगीरी दोनों ने ही मिलकर छत्तीसगढ़ में साहित्य आंदोलन को गति प्रदान की ।

'बच्चू जांजगीरी' ने पत्रकारिता और सहित्य को समान रूप से साधा था । हरि ठाकुर और बच्चू जांजगीरी ने मिलकर 'संज्ञा' मासिक का संपादन और प्रकाशन किया था । उन्होंने छत्तीसगढ़ के कवियों की कविताओं के उल्लेखनीय संग्रह 'नये स्वर' का भी संपादन किया था । बच्चू जांजगीरी ने सप्रे जी पर काफी शोध किया था और हिन्दी की पहली कहानी के रचयिता के रूप में माधव राव सप्रे को स्थापित करने में भूमिका निभाई थी । इसी तरह मुकुटधर पाण्डेय के समग्र कृतित्व पर उन्होंने गंभीर समीक्षात्मक कार्य किया था । बच्चू जांजगीरी का 29 अक्टूबर 2013 को देहावसान हुआ था ।

छत्तीसगढ़ के सम्मानीय समीक्षक एवं कवि – प्रमोद वर्मा

प्रमोद वर्मा का जन्म तत्कालीन बिलासपुर जिले में 5 जून 1929 को हुआ था । उच्च शिक्षा विभाग में कार्यरत वर्मा जी कोरिया, अमरावती, उज्जैन, इंदौर, रायपुर, जगदलपुर, बिलासपुर, आदि जगहों पर कार्यरत रहें और प्राचार्य पद समे रिटायर हुये । छत्तीसगढ़ के जिन रचनाकारों ने अपनी प्रखर बौध्दिकता और निःसंगता के द्वारा हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनायी उनमें प्रमोद वर्मा शीर्ष स्थानीय हैं । पत्रिका 'वसुधा' में नियमित रूप से टिप्पणियां लिखकर प्रमोद वर्मा ने अपने समीक्षक जीवन की शुरुआत की थी और फिर मार्क्सवादी समीक्षा प्रणाली का पूरी तौर पर रंगरूप बादल दिया था ।

वर्मा जी की पहली समीक्षा कृति 'साहित्य रूप' 1971 में प्रकाशित हुई थी । इसके बाद ही आपकी दूसरी कृति 'अंग्रेजी की स्वच्छंद कविता' प्रकाशित हुई ।1973 में समीक्षा की तीसरी पुस्तक 'हलफनामा' और फिर 'रोमान की वापसी' प्रकाशित हुई ।

वर्मा जी का पहला कविता संग्रह – 'कविता दोस्तों में'1980 में प्रकाशित हुआ था । बाद में दो और कविता संग्रह 'बुलाने से नहीं आती नदी' और 'कल और आज के बीच' प्रकाशित हुए । 'लम्बा मारग दूरी घर' एक नाटक है जबकि उनके दो और समीक्षा ग्रंथ हैं :–'कालजयी मुक्तिबोध' और 'कदाचित संदर्शन'। प्रमोद वर्मा ने कहानियां भी लिखी थीं । प्रमोद वर्मा ने मुक्तिबोध की शैली में कुछ लम्बी कविताएं भी लिखीं, पर वे उन कविताओं के लिए नहीं जाने जाते ।

वास्तव में प्रमोद वर्मा एक समीक्षक ही थे और उनकी अपनी शैली संस्मरणात्मक समीक्षा या समीक्षात्मक संस्मरण की थी । प्रमोद वर्मा ने 'गजानन माधव मुक्तिबोध' शीर्षक से 'पहल' के लिए जो विनिबन्ध लिखा था वह उनकी समीक्षा शैली का एक अच्छा उदहारण है । उनकी समीक्षा में निस्संग आत्मीयता दिखायी देती है । प्रमोद वर्मा का निधन 31 मार्च 2000 को हुआ था ।

गरीबी हटाओ का नारा देने वाले - श्रीकांत वर्मा

प्रगतिशील आंदोलन के प्रमुख स्तंभ एवं आधुनिक हिन्दी कविता के एक अत्यंत महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में पहचाने जाने वाले रचनाकार श्रीकांत वर्मा का जन्म 18 सितम्बर 1931 को बिलासपुर में हुआ था । नागपुर विश्वविद्यालय समे 1956 में हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर आप दिल्ली चले गये जहां एक दशक तक विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में पत्रकार के रूप में भाग्य आजमाया । 1976 में कांग्रेस पार्टी के टिकट पर राज्यसभा पहुचे । श्रीकांत वर्मा ने 1980 में इंदिरा गांधी के चुनव अभियान के प्रमुख प्रबंधक बने और कांग्रेस को गरीबी हटाओं का अमर नारा दिया।

उनकी पहली कविता 1948 में सामने आयी थी – "बोलो उनके पद चिन्हों की धूल उठाने कौन चलेगा" । 'निकष' और 'संकेत' तथा 'नई दिशा' में उनकी कविताओं के प्रकाशन के साथ उनकी गणना तत्कालीन एक महत्वपूर्ण नये कवि के रूप में की जाने लगी । श्रीकांत वर्मा ने 1958 से 1964 के बीच अपनी सर्वोत्तम कविताएं लिखीं, जिनमें प्रमुख हैं : 'बुखार में कविता', 'समाधि–लेख', 'घरधाम', 'दिनचर्या', 'दिनारंभ', 'माया दर्पण', 'प्रेस–वक्तव्य' और 'पटकथा' ।

उनका पहला कविता–संग्रह 'भटका मेघ', 1957 में प्रकाशित हुआ, जिसमें उनकी आरंभिक रचनाएं थीं । लेकिन वे कविताएं हिन्दी कविता की भाषा, शिल्प, तेवर, अन्दाज और कथ्य में परिवर्तन का वाहक बनीं । उन्होंने हिन्दी कविता को रोमानी संस्कारों से मुक्त किया । उन्होंने नई कविता को सच्चे अर्थों में 'बीसवीं' शताब्दी की कविता' में परिणत कर दिया ।

उनका उपन्यास, 'दूसरी बार' 1968 में प्रकाशित हुआ था । उसमें अपने ही अन्तर्विरोधों से पराजित पात्र अपनी दुनिया से अजनबी और अकेले हैं । श्रीकांत वर्मा 1964 से 1977 तक प्रसिध्द साप्ताहिक पत्रिका 'दिनमान' से सम्बध्द रहे थे।

श्रीकांत वर्मा ने कविता लिखी, कहानी लिखी, उपन्यास लिखे, यात्रा–वृत्तांत लिखे, समीक्षाएं की, विदेशी रचनाकारों की कविताओं का अनुवाद किया और साक्षात्कार भी लिए और यह सब क्रमश प्रकाशित होता रहा । उनकी कृतियां हैं : काव्य रचनाएं – 'भटका मेघ' (1957), 'मायादर्पण' (1967), 'दिनारंभ' (1967), 'जलसाघर' (1973), 'मगध' (1983) और 'गरुड़ किसने देखा' (1986) । उपन्यास –'दूसरी बार' (1968)। कहानी संग्रह –'झाड़ी' (1964), 'संवाद' (1969), 'घर' (1981), 'दूसरे के पैर' (1984), 'अरथी' (1988), 'ठंड' (1989), 'वास' (1993) और 'साथ' (1994) । यात्रा वृत्तांत –'अपोलो का रथ' (1973) । आलोचना – 'जिरह' (1975) । साक्षात्कार – 'बीसवीं शताब्दी के अंधेरे में' (1982)। अनुवाद –'फैसले का दिन' – रूसी कवि आंद्र बेंज्नेसेंस्की की कविताओं का अनुवाद है । श्रीकांत वर्मा का देहावसान 25 मई, 1986 को हुआ था । 1987 में 'मगध' नामक कविता संग्रह के लिए मरणोपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

कलात्मक शैली के अद्भुत रचनाकार - गुलशेर अहमद खाँ 'शानी'

16 मई 1933 को जगदलपुर में जन्में गुलशेर अहमद खाँ का जन्म हुआ किंतु अपनी लेखनी का सफर नामा आपने जगदलपुर से प्रारम्भ कर ग्वालियर फिर दिल्ली तक तय किया । आपको 'शानी' उपनाम से जाना जाता है। शानी मध्यप्रदेश साहित्य के सचिव और परिषद की ही साहित्यिक पत्रिका साक्षात्कार के संस्थापक–संपादक रहे । मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त शानी जी बस्तर जैसे आदिवासी इलाके में रहने के बावजूद अंग्रेजी और हिंदी के अच्छे ज्ञाता थे । उन्होंने एक विदेशी समाजविज्ञानी के आदिवासियों पर किए जा रहे शोध पर भरपूर सहयोग दिया और शोध अवधि तक उनके साथ सुदूर बस्तर के अंदरूनी इलाको में घूमते रहे । कहा जाता है उनकी दूसरी कृति साल वनों का द्वीप इसी यात्रा के संस्मरण से पिरोई गई है ।

शानी की पहली कहानी 1950 में छपी थी, शीर्षक था 'भावुक' । शानी के कई उपन्यास और कथा संग्रह प्रकाशित हुए । उपन्यास हैं– 'सांप और सीढ़ी', 'फूल तोड़ना मना है', 'एक लड़की की डायरी' और 'काला जल' । उनके कथा संग्रह हैं – 'बबूल की छाव', 'डाली नहीं फूलती', 'छोटे घेरे का विद्रोह', 'एक से मकानों का नगर', 'युद्ध', 'शर्त का क्या हुआ?', 'बिरादरी' और 'सड़क पार करते हुए' ।

आपने 'काला जल' की रचना 1960–61 में की लेकिन छपा 1965 में । यह भारतीय समाज के अलक्षित–उपेक्षित मुस्लिम समुदाय के जीवन के दुखद और संघर्षमय जीवन का दस्तावेज हैं । उनका उपन्यास 'सांप और सीढ़ी' संक्रमण के शिकार एक गांव की कहानी है । 'एक लड़की की डायरी' उपन्यास जिंदगी का मतलब तलाशती दो स्त्रियों की कथा और 'नदी और सीपियां' रिश्तों में वर्जनाओं के प्रश्नों को समझने का प्रयास है । 'शानी' के आलेख या संपादकीय टिप्पणियों में भी हम उन्हें उन सवालों से जूझता पाते हैं, जो उन्होंने अपनी कथा कृतियों में उठाए हैं । बस्तर के जनजीवन को लेकर उन्होंने एक संस्मरणात्मक कृति 'शाल वनों का द्वीप' की रचना की ।

शानी ने दो महत्वपूर्ण पत्रिकाओं "साक्षात्कार" और "समकालीन भारतीय साहित्य" का सम्पादन भी किया था । ऐसे संघर्षशील साहित्यकार का 62 वर्ष की आयु में 10 फरवरी 1995 को आपका देहावसान हो गया।

रंगमंच का लोकप्रिय चेहरा - शंकर शेष

तत्कालीन मध्यप्रदेश के बिलासपुर में हिन्दी साहित्य में नाट्य विधा के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान स्थापित करने वाले डॉ. शंकर शेष का जन्म 2 अक्टूबर 1933 को हुआ था। नागपुर विश्वविद्यालय से 1964 में पी.एच.डी. की उपाधी ली।

डॉ.शेष 1956 से ही रंगमंच से संबद्ध हुए और जीवनपर्यंत रहे। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,मुंबई के हिंदी अधिकारी के पद पर रहते हुए 70 के दशक में नाट्य लेखन शुरू किया था। उन्हें 1973 में एक स्पष्ट पहचान मिली जब प्रख्यात रंग निदेशक बी.वी. कारन्त ने भोपाल में रंग शिविर में शेष के द्वारा लिखित नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' को प्रस्तुत किया। इसके बाद डॉ.शेष ने एकल पात्र को ध्यान में रखकर जेल में बंद एक कैदी के जीवन की बहुवर्णी गाथा 'फन्दी' नाटक में प्रस्तुत की थी। उनके दो और महत्वपूर्ण नाटक थे –'रक्तबीज' और 'घरौंदा'। 'घरोंदा' पर हिन्दी में एक लोकप्रिय फिल्म बनी थी और फिल्म 'दूरियां की कहानी' के लिए आपको फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला। उनके 'कालजयी' नामक नाटक में राजनैतिक विडंबनाओं को बड़ी तल्खी के साथ उजागर किया गया है।

डॉ. शेष बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने आरंभ में कविताएँ भी लिखी और नाटककार होने के साथ–साथ वे कथाकार भी थे परंतु सर्वाधिक प्रसिद्धि उन्हें नाटकों के क्षेत्र में ही मिली। डॉ. शेष युग चेतना से संपन्न कलाकार थे, इसलिए उनकी रचनाओं में सामाजिक विसंगतियों का खुला चित्रण हुआ है। 'रत्नगर्भ', 'रक्तबीज', 'बाढ़ का पानी', 'पोस्टर', 'चेहरे', 'राक्षस', 'मूर्तिकार', 'घरौंदा' जैसे नाटक सामाजिक यथार्थ को अनावृत्त करनेवाली रचनाएँ हैं। महाभारत के कथानक को लेकर डॉ. शंकर शेष के दो उपन्यास हैं – 'गांधारी' और 'धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्र'। डॉ.शेष जी का निधन 26 अक्टूबर को 1981 को श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ था।

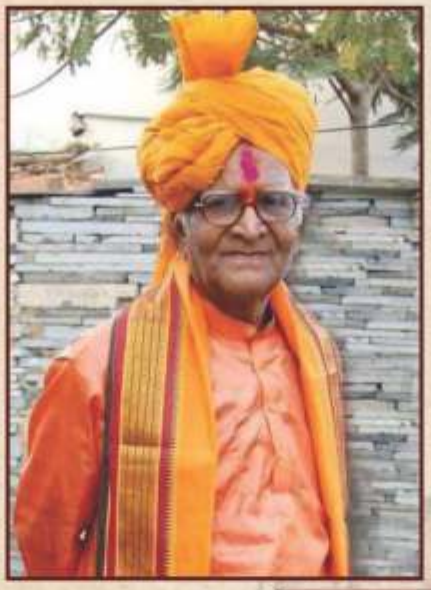

ग्राम्य अंचल से निकले प्रशासक एवं साहित्यकार- डॉ. मन्नूलाल यदु

डॉ. मन्नूलाल यदु का जन्म 13 मार्च 1934 को ग्राम महका, बेमेतरा–दुर्ग में हुआ। आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार आपका जन्म प्रतिष्ठित मालगुजार परिवार में हुआ। आप सात संतानों में तीसरे क्रम के थे। आप पर सर्वाधिक प्रभाव काका स्व. सखाराम यदु, काकी स्व. सामबती का पड़ा। आपने हिंदी भाषा विज्ञान एवं राजनीतिशास्त्र में स्नातकोत्तर के पश्चात पी.एच.डी. की।

आपने साहित्यिक यात्रा के दौरान आपके विभिन्न विधाओं पर सौ से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, जिसमें छत्तीसगढ़ी लोकोत्तियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, हिंदी के बहु प्रयुक्त शब्दों का ध्वन्यात्मक लिखांकन, पिछड़ेपन का मनोविज्ञान, छत्तीसगढ़ी शब्द कोश, राजीव गांधी भारतीयता की तलाश, यादवी संस्कृति, फुगड़ी, रामनवमीं प्रसंग, कृष्ण जन्माष्टमी प्रसंग आदि कई स्मारिकाओं का संपादन किया। विभिन्न पर्व प्रसंगों, सामयिक विषयों पर रेडियो वार्ताएं प्रसारित हुईं। आपने कृष्णसख एवं अस्मिता शंखनाद पत्रिकाओं का संपादन भी किया। सम्प्रति, आप शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान के संस्थापक अध्यक्ष हैं एवं साहित्य की साधना में स्वतंत्र लेखन से योगदान दे रहे हैं।

आपको राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर कई शासकीय, अशासकीय एवं समाजसेवी संगठनों के जिम्मेदार पदों पर है. उन्हें अब तक सैकड़ों सम्मान मिल चुके हैं, किंतु अहंकार में कोसों दूर डॉ. यदु अपने कार्यों में तल्लीन रहते हैं, म.प्र. नागरिक आपूर्ति निगम अध्यक्ष पद पर रहते हुए जनहित अनेक नाम किए, जिसमें सार्वजनिक वितरण प्रणाली की शुरूआत है, जो अभी भी जारी है।

छत्तीसगढ़ी का उद्विकास बताने वाले - नरेन्द्र देव वर्मा

नरेन्द्र देव वर्मा छत्तीसगढ़ के एक श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने अल्पकाल में छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी के विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान किया था ।

नरेन्द्र देव वर्मा का जन्म 4 नवम्बर 1939 को हुआ था। उन्होंने हिंदी एवं विज्ञान में पी.एच.डी. की। नरेन्द्र देव वर्मा ने हिन्दी और छत्तीसगढ़ी में समान रूप से लिखकर यश अर्जित किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा एवं व्याकरण का ग्रंथ लिखा – 'छत्तीसगढ़ी का उद्विकास' । सन् 1962 से 1965 के बीच उनकी अनेक छत्तीसगढ़ी कहानियां प्रकाशित हुई।

साठ के दशक की राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिका 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में जब उनका 'सुबह की तलाश' उपन्यास धारावाहिक रूप में छपा तब हिन्दी के पाठकों को लगा कि आंचलिक साहित्य का एक नया आयाम उद्घटित हो रहा है। बाद में यह धारावाहिक रचना एक पुस्तकाकार उपन्यास के रूप में आई। उनका काव्य संकलन है – 'अपूर्वा' । उन्होंने कुछ पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया – मोंगरा, श्री मां की वाणी, श्री कृष्ण की वाणी, श्री राम की वाणी, बुद्ध की वाणी, ईसा मसीह की वाणी, मोहम्मद पैगंबर की वाणी। उन्होंने अपने समय की एक उल्लेखनीय पत्रिका 'विवेक ज्योति' का संपादन भी किया था। उन्होंने छत्तीसगढ़ की वंदना के कई अविस्मरणीय गीत लिखे थे। इसी क्रम में उनका एक सर्वाधिक लोकप्रिय और महत्वपूर्ण गीत उभरकर आया जो छत्तीसगढ़ की पहचान बन गया।

छत्तीसगढ़ माटी का यह सर्वाधिक तेजवान व्यक्तित्व शासकीय महिला महाविद्यालय, रायपुर में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष के पद पर रहा। किंतु आकास्मिक रूप से युवावस्था में 9 सितम्बर 1979 को पंचतत्व में विलीन हो गया।

नुक्कड़ नाटक विधा के पुरोधा – विभु खरे

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में छत्तीसगढ़ के जिन युवा रचनाकारों ने अपनी प्रारंभिक कृतियों से ही अखिल भारतीय पहचान बना ली थी उनमें विभु खरे का नाम अग्रणी है । कथाकार के रूप में अपनी रचना यात्रा शुरू कर विभु खरे एक नवाचारी नाटक लेखक और नुक्कड़ नाटकों के सामाजिक सरोकारों से जोड़ने के लिये प्रसिद्ध हुए।

आपका जन्म 13 मार्च 1942 को हुआ था। साठ के दशक की महत्वपूर्ण पत्रिका 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रेमचंद कहानी प्रतियोगिता में विभु की कहानी 'यात्रा–शवयात्रा' सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में पुरस्कृत हुई। इसी के साथ ही विभु की पहचान एक सफल कथाकार के रूप में बनने लगी और फिर विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी कहानियां प्रकाशित होती रहीं। सत्तर के दशक में वे कहानी साहित्य के एक जाने पहचाने हस्ताक्षर बन गये थे। उनके प्रकाशित कथा संग्रह हैं – 'सही आदमी की तलाश', 'मेरे साथ यही तो दिक्कत है' और 'मां तुम कविता नहीं हो' ।

विभु ने धीरे से किन्तु स्पष्ट रूप से अपने कों नाट्य लेखन की ओर मोड़ लिया। उन्होंने एक–एक कर छः नाटक लिखे। उनके प्रकाशित नाटक हैं – 'तालों में बंद प्रजातंत्र', 'अपरिभाषित', 'कहे ईसा सुने मूसा', 'हवाओं का विद्रोह', 'मुन्नी बाई' और 'बे–दरो दीवार का इक घर बनाया चाहिये' । इन नाटकों में विभु ने समाज के उन मुद्दों कों उठाया जो उन्हें झकझोर रहे थे। ये मुद्दे सामाजिक आर्थिक तो थे ही उनमें राजनीतिक चुटकियां भी होती थी।

उन्होंने 'हस्ताक्षर' शीर्षक वाली एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया था। यह पत्रिका नियमित तो नहीं निकलती थी किन्तु जब भी निकलती वह साहित्यिक चर्चा के केंद्र में होती। विभु जी का निधन जनवरी 2007 में हुआ था ।

छत्तीसगढ़ की महिलाओं की आवाज –
आशा शुक्ल

आशा शुक्ला का जन्म रायपुर (छ.ग.) जिले में 31 अक्टूबर 1946 को हुआ था। आपने एम.ए. (राजनीति शास्त्र एवं लोक प्रशासन) तथा पत्रकारिता में डिप्लोमा किया। आपके पिता स्व.शंकरलाल जरगर, पूर्व संयुक्त संचालक पशु चिकित्सा विभाग, म.प्र. शासन थे एवं माता स्व. ज्वालादेवी एक गृहिणी थी।

आपने अपनी साहित्यिक यात्रा के दौरान 33 वर्षों तक प्रतिष्ठित समाचार पत्र नवभारत में कार्य करने के पश्चात स्वतंत्र लेखन प्रारंभ किया। स्त्री विमर्श के अलावा अन्य सामाजिक सरोकारों के विषय पर एक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम का सृजन किया। 'एक नदी की मौत' नामक डाक्यूमेंट्री फिल्म का निर्माण किया एवं कवर्धा जिले की बैगा आदिवासी महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी एक डाक्यूमेंट्री फिल्म का निर्माण किया। छत्तीसगढ़ की दलित एवं आदिवासी महिलाओं के अधिकारों पर आधारित इनके कार्यों के लिए पेनास ;साऊथ एशियाद्ध एवं स्विस ऐड की फैलोशिप प्रदान की गई। आपको विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक संगठनों द्वारा सम्मान व अभिनंदन के अलावा पत्रकारिता के क्षेत्र में लोक जागरण के लिए 'वसुंधरा सम्मान' प्रदान किया गया।

बस्तर के सुदूर वनक्षेत्रों एवं कांकेर व नारायणपुर जिले के 40 गांवों में विकास के मुद्दे पर किये गए आपके सराहनीय कार्य सदैव प्रशंसनीय रहेंगे।

छत्तीसगढ़ कुंडलियों का प्रथम कवि – जमुना प्रसाद कसार

जमुना प्रसाद कसार का जन्म तत्कालीन मध्यप्रदेश के जिला नरसिंहपुर (म.प्र.)के ग्राम चीचली में 26 जून 1926 को हुआ था। आपकी शिक्षा एम.ए. (हिन्दी), बी.टी. साहित्य रत्न, एम.एड (मास्टर ऑफ एजुकेशन) है।

आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार आपके पिताजी हरीराम कसार रायपुर जिलाधीश कार्यालय में आठ रूपये मासिक वेतन पर लिपिक का कार्य करते थे. पत्नी – शकुन्तला कसार, द्वितीय पुत्र अरूण कुमार कसार, एम.ए. (दर्शन शास्त्र)एल.एल.बी. कहानीकार– कवि हैं. वर्तमान में दुर्ग जिला हिन्दी साहित्य समिति के सचिव है।

आपके साहित्यिक यात्रा के अंतर्गत आप जबलपुर के प्रहरी एवं नागपुर के 'नया खून' में प्रकाशित सन् 1950–1960 के बीच अंग्रेजी में लेखन किया। आपकी कविता प्रकाशनः जीवन राग (काव्य संग्रह), अंगद (खण्ड काव्य), छत्तीसगढ़ी कुण्डलियां, छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखित कदाचित (कुंडलियों की प्रथम पुस्तक),कहानियां : सन्नाटे का शोर, अंधो के मुहल्ले में दर्पण की दुकान, कफन सरला ने कहा। उपन्यास : अक्षर, निबन्ध : संस्कार का मंत्रि, शोधः माता कैकई – एक साहित्यिक की डायरी – मुक्तिबोध, कथाभारती– कहानी संग्रह, प्रकाश्य : आजादी के सिपाही द्वितीय खंड, नाटक संग्रह , निबन्ध संग्रह ।

आपको मध्यप्रदेश का स्वतंत्रतासंग्राम सेनानी लेखन सम्मान (1997) राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री द्वारा प्रदत्त (ताम्रपत्र) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी साधना सम्मान (2005)। नवसाक्षर लेखन सम्मान (1999) राज्य संशोधन केन्द्र इंदौर द्वारा, साक्षरता सम्मान (2000),राष्ट्रीय साक्षरता संसाधन केन्द्र नई दिल्ली डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी स्मृति सम्मान (2008)। वर्तमान में भी आप साहित्य की सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

नराकास, भिलाई दुर्ग लगातार पांचवी बार मध्य क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से पुरस्कृत

नराकास, भिलाई दुर्ग के सदस्य संस्थानों के हिंदी समन्वयकों हेतु प्रशिक्षण की झलकियाँ

अविश्वसनीय दरों पर लैंडलाईन ब्रॉडबैंड के साथ

BSNL

Upto 20 Mbps Speed

BSNL के किफायती लैंडलाइन - ब्रॉडबैंड प्लान

	BBG Combo ULD 45 GB Plan	BBG Combo ULD 150GB Plan	BBG Combo ULD 300 GB Plan	BBG Combo ULD 600 GB Plan
अनलिमिटेड डाटा	1.5 GB प्रतिदिन 20 Mbps तक स्पीड, पश्चात 1 Mbps तक की स्पीड उपलब्ध	5 GB प्रतिदिन 20 Mbps तक स्पीड, पश्चात 1 Mbps तक की स्पीड उपलब्ध	10 GB प्रतिदिन 20 Mbps तक स्पीड, पश्चात 1 Mbps तक की स्पीड उपलब्ध	20 GB प्रतिदिन 20 Mbps तक स्पीड, पश्चात 1 Mbps तक की स्पीड उपलब्ध
फिक्स्ड मासिक चार्ज	99	199	299	491
डाउन लोड / अपलोड	अनलिमिटेड	अनलिमिटेड	अनलिमिटेड	अनलिमिटेड
अनलिमिटेड कॉल्स (लोकल / एस.टी.डी.)	24 घंटे सभी नेटवर्क पर फ्री, पूरे भारत वर्ष में	24 घंटे सभी नेटवर्क पर फ्री, पूरे भारत वर्ष में	24 घंटे सभी नेटवर्क पर फ्री, पूरे भारत वर्ष में	24 घंटे सभी नेटवर्क पर फ्री, पूरे भारत वर्ष में

नोट :-
1. सभी प्लान के लिए सिर्फ 500 / -सिक्युरिटी डिपाजिट जमा करना होगा।
2. कम से कम एक माह तक कनेक्शन रखना होगा।
3. यह प्लान सिर्फ नये ब्रॉडबैंड उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध है।
4. यह प्लान 6 माह पश्चात् रेगुलर ब्रॉडबैण्ड प्लान में परिवर्तित हो जायेगा।
5. उपरोक्त सभी प्लान 4 जून से प्रभावी है, जो 90 दिनों के लिए ही उपलब्ध रहेंगे।
6. कनेक्शन बुकिंग के लिए 9400054141 पर कॉल करें या LL+BB टाइप कर 54141 पर SMS करें या निकटतम् बी.एस.एन.एल कार्यालय में संपर्क करें।

अनलिमिटेड कॉल्स & अनलिमिटेड डाटा

सेल रिफ्रेक्ट्री यूनिट, भिलाई

सेल SAIL

इस्पात हेतु रिफ्रेक्ट्री....

सिलिका उत्पाद

We are everywhere, say, SAIL-Rourkela, Bhilai, Bokaro, Durgapur, Burnpur, Bhadravati, Salem, RINL-Vizag, NINL-Duburi, BHEL-Haridwar, RWF-Bengaluru & Air India - Mumbai

हम सर्व-व्याप्त है : सेल-राउरकेला, भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, बर्नपुर, भद्रावती, सेलम, आर.आई.एन.एल. विजाग, एन.आई.एन.एल.-डुबुरी, बी.एच.ई.एल.-हरिद्वार, आर.डब्ल्यू.एफ.-बेंगलुरु एवं एयर इंडिया-मुंबई

फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम), मिनी रत्न-II कंपनी

FERRO SCRAP NIGAM LIMITED

(A Govt. of India Undertaking), A Mini Ratna - II Company

ISO 9001:2008 14001:2004 & O.H.S.A.S. 18001:2007 प्रमाणित कंपनी

व्यर्थ का उपयोग - हमारा आदर्श

तकनीक - हमारा औजार

हम "व्यर्थ को अर्थ" में सम्परिवर्तित कर इस्पात संयंत्रों को विशिष्ट सेवाएँ देने हेतु कृत संकल्पित है।

FSNL Bhawan,
Equipment Chowk,
Central Avenue,
Post Box No. - 37
BHILAI - 490 001
CHHATISGARH.

Tel. No. : 2222474/2222475 (P & T)
4036/4037 (BSP)
Fax No. : 0788 - 2220423
0788 - 2223884
E-mail : mds@fsnl.co.in
Website : www.fsnl.nic.in
CIN : U27102CT1989GOI005468

हम सर्व-व्याप्त है : सेल-राउरकेला, भिलाई, बोकारो, दुर्गापुर, बर्नपुर, भद्रावती, सेलम, आर.आई.एन.एल. विजाग, एन.आई.एन.एल.-डुबुरी, बी.एच.ई.एल.-हरिद्वार, आर.डब्ल्यू.एफ.-बेंगलुरु एवं एयर इंडिया-मुंबई

We are everywhere, say, SAIL-Rourkela, Bhilai, Bokaro, Durgapur, Burnpur, Bhadravati, Salem, RINL-Vizag, NINL-Duburi, BHEL-Haridwar, RWF-Bengaluru & Air India - Mumbai